200 वीं

महर्षि दयानन्द सरस्वती | जयन्ती 1824-2024

वेदों की ओर लौटो !

|| ओ३म् ||

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २३ अंक ११,१२-नवम्बर, दिसम्बर २०२३

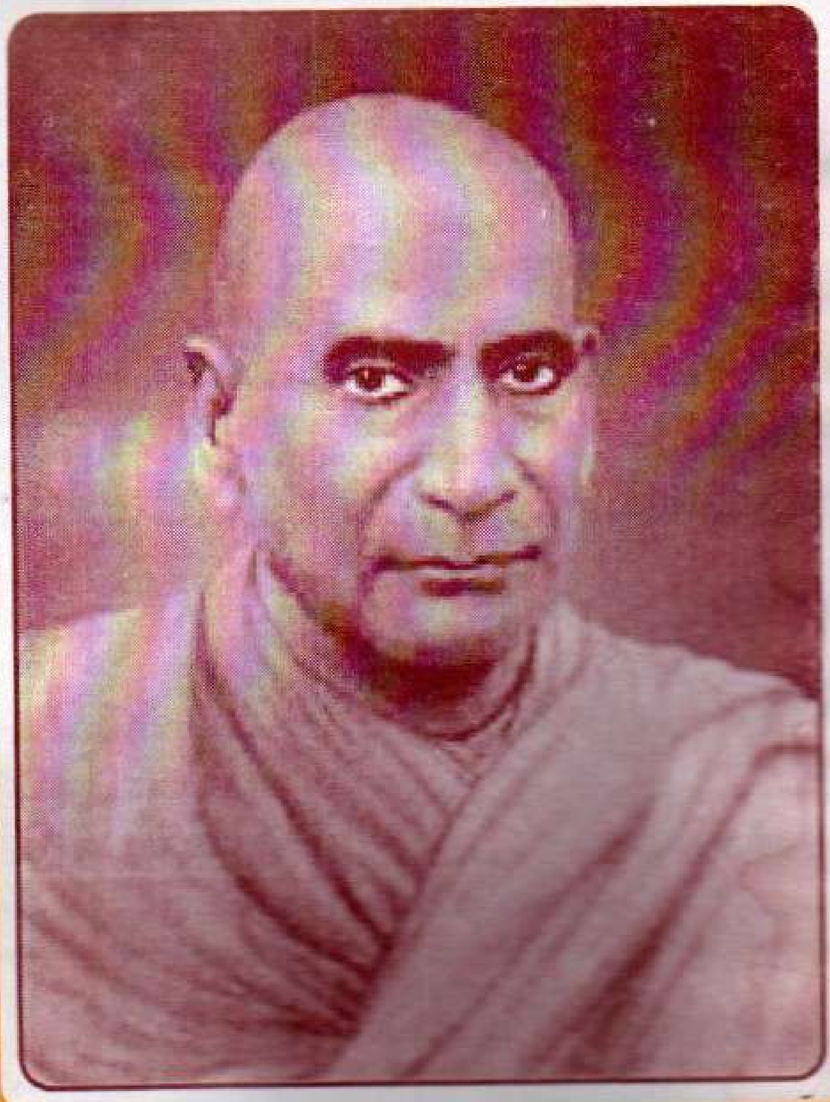

स्वतन्त्रता, स्वराज्य, गुरुकुलीय शिक्षा, वेदप्रचार एवं
शुद्धि कार्य में सर्वस्व आहुत करनेवाले दिव्यात्मा
स्वामी श्रद्धानन्दजी को नमन...!

चलो परली ! || ओ३म् || चलो परली !

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य समाज परली के सहयोग से

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन,

श्रद्धानन्द गुरुकुल वार्षिकोत्सव एवं

पूज्य सोममुनिजी जन्मशताब्दी समारोह

दि. २,३ व ४ फरवरी २०२४ (शुक्र. शनि. रविवार)

प्रिय सज्जनों, सस्नेह नमस्ते !

आप सभी को विदित कराते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में तथा आप सभी के सहयोग से समग्र क्रांति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी के पावन उपलक्ष्य में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दि.२,३ व ४ फरवरी २०२४ को विविध कार्यक्रमों के साथ भव्यतापूर्वक मनाया जा रहा है। इसी के साथ श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली वैजनाथ का वार्षिकोत्सव एवं वैराग्यमूर्ति पूज्य सोममुनिजी शताब्दी कार्यक्रम और हैदराबाद स्वतंत्रता सेनानियों व सेवाव्रतियों का सम्मान एवं विभिन्न सम्मेलन, भव्य शोभा यात्रा आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

१०७ वर्षीय समाजसेवी व्यक्तित्व पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी (हीरचंद्र गुरुजी) एवं कर्मठआर्य मनीषी पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी के सुसान्निध्य में होनेवाले इस त्रीदिवसीय समारोह में निम्नांकित आर्यनेता, विद्वान तथा आर्यभजनोपदेशिका पधार रहे हैं।

- मा.श्री विनयजी आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
- मा.श्री.प्रकाशजी आर्य (पूर्व मंत्री, सार्वदेशिक आर्य सभा)
- मा.श्री.महेशजी वेलानी (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई)
- मा.श्री.सत्यवीरजी शास्त्री (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, विदर्भ म.प्र.)
- मा.पं. श्री. प्रियदत्तजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, हैदराबाद),
- मा.प्रा.श्री. सोनेरावजी आचार्य (वैदिक विद्वान, पुणे)
- मा.पं.श्री.राजवीरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, सोलापूर)

विशेष भजन संगीत प्रस्तुति

आचार्या सविता आर्या (वेदरत्ना) एवं ब्रह्मचारिणियां
(पाणिनि प्रभात कन्या गुरुकुल हैदराबाद)

अतः सभी से अनुरोध है कि आप सभी सपरिवार, मित्रजनों सहित इस त्रीदिवसीय समारोह में पधार कर कार्यक्रमों की शोभा बढ़ावें।

❋ विनीत ❋

योगमुनि – सदस्य, केन्द्रीय म.दयानंद द्विजन्मशताब्दी समिति, (प्रधान), राजेंद्र दिवे (महामंत्री), उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष), दयाराम वसैये, लखमसीभाई वेलानी, प्रमोदकुमार तिवारी, ओमप्रकाश पाटील (उप प्रधान), प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, शंकरराव बिराजदार, विजयकुमार कारडे, गंगाबाई मामपल्ले (उपमंत्री) तथा अन्य पदाधिकारी, **महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

जुगलकिशोर लोहिया (प्रधान), उग्रसेन राठौर(मंत्री), देविदासराव कावळे (कोषाध्यक्ष), लक्ष्मण आर्य-गुरुजी, डॉ. मधुसूदन काले (उप प्रधान), जयपाल लाहोटी, प्रशांतकुमार शास्त्री (उपमंत्री), आचार्य सत्येंद्र (गुरुकुल, परली), प्रा.डॉ.अरुण चव्हाण (पुस्तकाध्यक्ष) तथा अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता ।

आर्य समाज परली वैजनाथ, जिला - बीड

❋ जानकारी हेतु ❋

राजेन्द्र दिवे – 9822365272
(मंत्री, म.आ.प्र.सभा)

डॉ.नयनकुमार आचार्य – 9420330178
(वेदप्रचार अधिष्ठाता, म.आ.प्र.सभा)

रंगनाथ तिवार – 9423472792
(व्यवस्थापक, म.आ.प्र.सभा)

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, नंदागौल मार्ग,परली– वैजनाथ, जि.बीड

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ अश्विन/कार्तिक नवम्बर, दिसम्बर २०२३

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई-मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४

२) वैदिक दृष्टि में विश्वपरिवार! (सम्पादकीयम्)........ ०५

३) महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त ०७

४) कल्याण मार्ग के 'पथिक'- स्वामी श्रद्धानन्द ०९

५) समाचार दर्पण १४

६) शोकसमाचार १७

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९

२) द्विजन्मशताब्दी एका युगप्रवर्तकाची! २०

३) यज्ञाचा पर्यावरणावरील सुपरिणाम २४

४) वैदिक शास्त्रात जातिभेद नाहीत २९

५) राज्यस्तरीय श्रावणी वृत्तांत ३१

६) वार्ताविशेष ३९

७) शोकवार्ता ४२

प्रकाशक

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

मुद्रक

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

विद्वान् लोग कैसा व्यवहार करें?

अयं द्योतयदद्युतो व्य१क्तून् दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्र।
इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार।।

(ऋवेद)

पदार्थान्वय– हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश वर्तमान विद्वन्! जैसे **(अयम्)** यह **(इन्दुः)** गीला करनेवाला सूर्य **(अद्युतः)** नहीं प्रकाश करनेवाले भूमि आदिकों को और **(अक्तून्)** रात्रियों को **(दोषा)** प्रभातकालों को **(वस्तोः)** दिन को**(शरदः)** शरद् आदि ऋतुओं को **(वि, द्योतयत्)** प्रकाशित करता है और **(अह्नाम्)** दिनों के **(चित्)** भी **(शुचिजन्मनः)** सूर्य से जन्म जिसका, उस **(उषसः)** प्रभात वेला की प्रकटता को **(चकार)** करता है, वैसे **(इमम्)** इस **(केतुम्)** वृद्धि को प्रकाशित कीजिये और जैसे इस प्रकाशस्वरुप सूर्य्य को प्रभात वेलायें **(अदधुः)** धारण करें, वैसे **(नू)** शीघ्र विद्या के प्रकाश को धारण करिये।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोमा है। – हे विद्वान् जनो! आप लोग जैसे सूर्य अप्रकाशक भूमि आदि का प्रकाश करने और आनन्द करने वाला पवित्रक्षण आदि समयों का निर्माण करता है, वैसे मनुष्यों के आत्माओं के प्रकाशक हुए विद्या की वृद्धि करनेवाले कर्मों को निष्पन्न कीजिए और कर्मों का प्रचार कराइये। **(म.दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य से साभार)**

प्राकृतिक परिवर्तन का नवसन्देश तथा उदारता, दान व धर्मपरायणता का पावन सन्देश देनेवाले भारतीय पर्व

मकर सक्रांति

की हार्दिक शुभकामनाएं..!

उत्तरायण का सूर्य आपके सपनों को नयी उष्मा प्रदान करें!

आपके यश व कीर्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो...!

सम्पादकीयम्...

वैदिक दृष्टि में विश्व परिवार

राजधानी दिल्ली में गत दि.९ व १० सितम्बर को 'जी-२० शिखर सम्मेलन' सम्पन्न हुआ। इसका नेतृत्त्व इस वर्ष भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने किया। सम्मेलन का ध्येय वाक्य था- **'वसुधैव कुटुम्बकम्!'** अर्थात् एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य!यद्यपि यह सम्मेलन आंतरराष्ट्रीय आर्थिक विकास व पर्यावरणरक्षा में सभी की सामूहिक भूमिका को अभिलक्षित कर रहा हो, फिर भी उपरोक्त संकल्पना संसार के व्यापकता को दर्शाती है। विश्व की दुरवस्था पर दृष्टिपात करें, तो भयावह स्थिति नजर आ रही है। सभी देश यदि इन समस्याओं का सुसमाधान चाहते हो, तो उन्हें वैदिक शिक्षाओं को अपनाना होगा। क्योंकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सही आधार तो वेदज्ञान ही है।

वेदों का उपदेश ही समग्रता को लेकर है। संसार का प्रत्येक मानव सुखी, शान्तयुक्त रहे एवं वह सन्मार्ग पर चलता रहे, यही वेदों की आकांक्षा है। 'वसुधैव कुटुंबकम्।' की भावना वेद के असंख्य मन्त्रों में अभिव्यक्त होती है।वैश्विक कल्याण का उपदेश करते हुए अथर्ववेद(१/३१/४)का मंत्र कहता है-

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु
ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।

अर्थात् संसार में जितनी भी माताएं हैं, उन सभी का कल्याण हो।साथ ही जो हमारे पिता वर्ग हैं, उनका भी भला हो । वैश्विक परिवारों के माता-पिता की भलाई की बात सबसे पहले वेद करता है । जितनी भी गौवें हैं, वे सुखी व आनन्दपूर्वक जीवे। हम सब इनकी रक्षा करें। गो के शब्द के उपलक्षण से हम सभी पशुओं को ले सकते हैं। इनकी कदापि हत्या न हो।

आगे मंत्र कहता है 'जगते' अर्थात् समग्र विश्व का मंगल होवे ! संसार की जड़ व चेतन वस्तुएं भी सु-अस्तित्व वाली हो। मंत्र में आगे कहा है- **'पुरुषेभ्यः!'** सभी पुरुषों का भी कल्याण हो। मंत्र का उत्तरार्ध है-**विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नोऽस्तु।** अर्थात् यह सारा जगत् भौतिक ऐश्वर्य एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। हर एक देश सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों से सम्पन्न होकर वहाँ के नागरिकों में उत्तम ज्ञान व आध्यात्मिकता आवे।

वेद के ज्ञान-विज्ञान में शाश्वत

सुख एवं आनंद समाया हुआ है। धरती पर निवास करनेवाला प्रत्येक मानव वेद की पावन ऋचाओं व मन्त्रों के अनुसार जीवनयापन करेगा, तो वह निश्चय ही अपने व्यक्तिगत जीवनोत्थान के साथ परिवार, समाज, देश व अंत में सारे संसार में सुख व शांति की स्थापना करेगा।

आज का मानव न जाने कितनी ही समस्याओं से घिरा है। आए दिन वह भयावह संकटों का सामना कर रहा है। काम, क्रोध, लोभ ,मद-मोह, द्वेष मत्सर घृणा आदि दोषों में लिप्त होकर अपने साथ ही समाज राष्ट्र एवं विश्व के मानव के लिए खतरा बन गया है। अपने ही दोषों व विकृतियों कारण इस स्वर्गसम वसुन्धरा पर उसने नरक का वातावरण निर्माण किया है। आज का मानव समूह धन-दौलत के भरे भंडार होते हुए भी चैन की नींद नहीं सो रहा है। यह सब क्यों हो रहा है ? इसका कारण अन्य कोई नहीं, बल्कि वेद के विशुद्ध अर्थ को ना समझना है। संसार के मानव को वैदिक साहित्य 'शाश्वत सुख एवं कल्याण' के पथ पर चलने के लिए अमूल्य उपदेश करता है। आज के परिप्रेक्ष्य में वेद का पवित्र ज्ञान समग्र विश्व के लिए नव संजीवनी बनेगा। वेदों ने सबसे पहले हर मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनने और दिव्य समाज की स्थापना करने का का संदेश दिया है

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

(ऋ.१०/५३/ ६)

जब हम जाति,संप्रदाय, वर्ग , भाषा या देशविशेष ऊपर उठकर मनुष्य बनेंगें,तो निश्चय ही हम इस वसुधारूप परिवार में भाई- बहन के नाते से रहेंगें। इस कुटुंब में हम सब एक समान है। कोई, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं। समानता की बात कहते हुए वेद कहता है-**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधो सौभगाय।**(ऋग्वेद-५/६०)

आज के बढ़ते संकीर्ण वातावरण में क्यों न हम इस वसुधा को ही अपना परिवार समझकर हर एक के साथ स्नेह एवं प्रेम का बर्ताव करें? वेद ने हर एक मनुष्य के साथ, इतना ही नहीं बल्कि सभी जीवों के साथ भी मित्र जैसा व्यवहार करने की बात कही है - **मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।** (यजु.३६/१८)

जब इन वैदिक शिक्षाओं पर विश्व के नेता गण व नागरिक अमल करेंगे, तो निश्चय ही वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना साकार होगी!

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त

- भावेश मेरजा

१) ऋषि दयानन्द 'सत्य' को सर्वोपरि मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि - जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना श्रेष्ठ है । सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं ।

२) ऋषि संसार के सब मनुष्यों को एक ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई मानते थे। मनुष्य मात्र की एक जाति, एक धर्म, एक लक्ष्य की स्थापना उनका इष्ट था। जन्म से सब मनुष्य समान और कर्म से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र हैं। वर्ण गुण कर्म स्वभाव सूचक हैं, जाति सूचक नहीं ।

३) ऋषि का लक्ष्य मनुष्य मात्र को यह ज्ञान कराना था कि वह शरीर नहीं, शरीर का स्वामी 'आत्मा' है, आत्मतत्त्व को जान, ईश्वर का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त कर मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। भोगवाद और अध्यात्म का समन्वय ऋषि का विशेष संदेश था।

४)ऋषि का यह अटूट विश्वास था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना वे परम धर्म मानते थे । उनका विचार था जब से भारत वासियों ने वेद का स्वाध्याय छोड़ा है तभी से भारत का पतन प्रारम्भ हुआ है।

५)नारी जाति को ऋषि पूजनीय मानते थे। उन्होंने ५००० वर्षों के बाद सबल स्वरों में यह घोषित किया - यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

६)ऋषि की दृष्टि में 'धर्म' वह है जिसका विरोधी कोई भी न हो सके। उनका कथन था कि - मैं अपना मंतव्य उसी को मानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। जो सत्य है उस का मानना-मनवाना और जो असत्य है उसका छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

७)ऋषि का आदेश था कि - अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरें ।

८)ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानते हुए, जीव को भोक्ता, प्रकृति को साधन, और ईश्वर से नित्य आनन्द प्राप्त करना जीव का लक्ष्य है। निरन्तर कर्म करते हुए, प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहना ही ज्ञानमार्ग उन्होंने बताया।

९) गंगा स्नान, व्रत, पूजा से

पाप क्षमा नहीं होते। कर्मों का फल सभी को भोगना ही होगा। ऋषि का यह विश्वास पुण्य और धर्म भाव की आधार शिला था।

१०)मूर्ति पूजा, अवतारवाद, छूआछूत, गुरुडम और अन्धविश्वास, भूत प्रेतादि और मत–मतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे व वे इन्हें मनुष्यजाति के पतन का कारण मानते थे।

११) ऋषि दयानन्द एक ईश्वर को उपास्य देव मानते थे। नाना देवी देवताओं और अवतारवाद को वे पतन का हेतु समझते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य मात्र अपने शुभ कर्मों से ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है इसके लिए किसी पैगम्बर या गुरु की आवश्यक नहीं।

१२) दयानन्द ऐसी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व्यवस्था चाहते थे, जिसके द्वारा संसार स्वर्ग बन जाए और जन्म से मृत्यु तक कोई भी मनुष्य दुःख, कष्ट क्लेश अनुभव न करे।

१३) सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके, सब से सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। – ऋषि का यह चरम लक्ष्य उनके ही शब्दों में कितना स्पष्ट है।

१४)अपने चरम लक्ष्य को पूरा करने की ऋषि की अत्यन्त उत्कंठा थी। वे लिखते हैं – सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाए। क्यों प्रवृत्त हो जाए – इसका उत्तर ऋषि के शब्दों में इस प्रकार है – जिस से सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।

–८/७०१७, टाऊनशिप, नर्मदानगर,
भरुच (गुजरात) मो.९८७९५२८२४७

जगत् उद्धारक-म.दयानन्द..!

स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे भारत के मान्य और धर्मगुरु थे, वैसे ही वे अमेरिका तथा यूरोप आदि समस्त संसार के धर्मोपदेशक थे। जिस प्रकार वे भारत में प्रचलित मत-मतान्तरों की समालोचना करते थे, उसी प्रकार अन्य देशों में प्रादुर्भूत मतों की भी छानबीन करते थे। सर्वसंसार के लिए परम पिता से उपदिष्ट वैदिक धर्म ही उनको शिरोधार्य था और सब देशों और कालों के लिए उसी एकरस वैदिक सिद्धान्त का ही वे जगदीश के अमृतपुत्रों के लिए उपदेश देते थे।

-पं. भवानीप्रसाद

कल्याण मार्ग के 'पथिक'–स्वामी श्रद्धानन्द

– मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द के शिष्यों में से स्वामी श्रद्धानन्द एक प्रमुख शिष्य है, जिनका जीवन एवं कार्य सभी आर्यजनों व देशवासियों के लिए अभिनन्दनीय व अनुकरणीय हैं। उनकी 'कल्याण मार्ग का पथिक' यह आत्मकथा शायद पहली है, जिसमें उन्होंने अपने चारित्रिक पतन की घटनाओं का वर्णन कर अपने हृदय के सभी भावों को खोलकर रखा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बचपन का नाम बृहस्पति था। आपका जन्म गुरुवार (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी १९१३ व्रिकमी) ३ अप्रैल, सन् १८५६ को ग्राम तलवन जिला जालंधर (पंजाब) में लाला नानकचन्द जी क्षत्रिय के घर में हुआ था। पिता पुलिस विभाग में सेवारत रहे। जन्म के कुछ समय बाद पिता से आपको मुंशीराम नाम प्राप्त हुआ था, जो संन्यास से पूर्व तक रहा। जन्म के तीन वर्ष बाद बरेली नगर में आपकी शिक्षा आरम्भ हुई थी। १० वर्ष की अवस्था होने पर सन् १८६६ में काशी में आपका उपनयन संस्कार हुआ था। इन दिनों आपके पिता इसी स्थान पर सेवारत व पदासीन थे। १७ वर्ष की अवस्था में आप क्वीन्स कालेज, बनारस में अध्ययन हेतु प्रविष्ट हुए थे। श्री मोतीलाल नेहरू इस कालेज में आपके सहपाठी थे। २१ वर्ष की आयु में मुंशीराम जी का विवाह हुआ। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत थी। अपने पतिधर्म का इतनी उत्तमता से निर्वाह किया, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मकथा पढ़कर ही जाना जा सकता है। माता शिवदेवी जी के पिता सोंधी परिवार के लाला शालिग्राम थे। सन् १८७९ में मुंशीराम जी के जीवन में अनेक घटनायें घटी जिन्होंने पौराणिक रीति से पूजापाठ करने वाले मुंशीराम जी को नास्तिक विचारों का युवक बना दिया था। जिन दिनों आप अपने पिता के साथ बरेली में रह रहे थे, सौभाग्य से तब वहां वेदों के अपूर्व विद्वान तथा वेदों के प्रचारक ऋषि दयानन्द का उपदेशार्थ पधारना हुआ।

स्वामी दयानन्द के बरेली में आयोजित उपदेशों में सुरक्षा की दृष्टि से मुंशीराम जी के पिता नानक चन्द जी को ड्यूटी पर नियुक्त किया गया था।

ऋषि दयानन्द के उपदेश सुनने उन दिनों बरेली के बड़े बड़े अंग्रेज अधिकारी भी आया करते थे। उपदेशों में सत्यधर्म की मान्यताओं का उल्लेख व उनका मण्डन तथा असत्य व तर्कहीन बातों का खण्डन किया जाता था। ऋषि दयानन्द ईश्वर में विश्वास रखने वाले उच्चकोटि के महापुरुष व महात्मा थे। अतः मुंशीराम जी के पिता ने मुंशीराम जी को ऋषि दयानन्द के व्याख्यान सुनने के लिए वहां जाने की प्रेरणा की। पिताभक्त मुंशीराम जी अपने पिता की प्रसन्नता के लिये ऋषि दयानन्द के प्रवचनों में गये थे। उन्होंने न केवल उनके उपदेश ही सुने थे, अपितु उनसे शंका समाधान भी किया था। इसे हम नास्तिक-आस्तिक संवाद भी कह सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने मुंशीराम जी के सभी प्रश्नों व शंकाओं का समाधान कर दिया था। इससे मुंशीराम जी के मन व आत्मा में सच्ची आस्तिकता का बीज पुनः अंकुरित हो गया। समय आने पर वह विचार फला व फूला और उसने मुंशीराम जी को भी एक आदर्श ईश्वर-भक्त तथा देश व समाज का सुधारक ही नहीं बनाया, अपितु देश का निर्माता एवं वैदिक धर्म का आदर्श प्रचारक व सेवक बनने का गौरवपूर्ण अवसर भी प्रदान किया। इससे मुंशीराम जी एक आदर्श देशभक्त, समाज सुधारक तथा वैदिक धर्म के उद्धारक व प्रचारक बने। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' नाम से लिखी है। इस पुस्तक को सभी पाठकों को पढ़ना चाहिये। इससे उन्हें भी कल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

मुंशीराम जी संन्यास धारण करने से पूर्व अपने जीवन में महात्मा मुंशीराम जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप सत्यार्थप्रकाश पढ़कर व उससे प्रभावित होकर सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना के ९ वर्ष बाद सन् १८८४ में आर्यसमाज, जालन्धर के सदस्य बने थे। अपनी विद्वता, सामाजिक कार्यों एवं संगठन विषयक योग्यता सहित वैदिक धर्म के प्रति समर्पण के कारण आर्यसमाज का सदस्य बनने के दो वर्ष बाद सन् १८८६ में ही आप आर्यसमाज जालन्धर के प्रधान चुने गये। आपकी शिक्षा मुख्तारी की परीक्षा पास करने तक हुई थी। आपने सन् १८८८ में जालन्धर में वकालत करनी आरम्भ की थी। आप वही मुकदमें लिया करते थे, जो सत्य हुआ करते थे। किसी मुकदमें का झूठा होना यदि आपको पता चलता तो उसे आप छोड़ देते थे। अपने ज्ञान एवं पुरुषार्थ से शीघ्र ही आप एक सफल

वकील सिद्ध हुए थे। आपने अपनी आय से जालन्धर में एक बड़ी कोठी बनवाई थी जिसे बाद में आपने अपनी अन्तिम सम्पत्ति के रूप में वेद प्रचारार्थ गुरुकुल कांगड़ी को दान कर दी थी। सन् १८८९ की बैसाखी के दिन आपने जालन्धर से **'सद्धर्म प्रचारक'** नामक एक उर्दू पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया था। यह पत्र भी अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। बाद में हिन्दी की महत्ता के कारण आपने भारी घाटा उठाकर इसका प्रकाशन हिन्दी भाषा में कर दिया। इस पत्र में प्रकाशित महात्मा मुंशीराम जी के लेख व सम्पादकीय बहुत रुचि से पढ़े जाते थे।

सन् १८९० में महात्मा मुंशीराम जी ने लाला देवराज जी के साथ मिलकर जालन्धर में एक 'आर्य कन्या महाविद्यालय' स्कूल व कालेज की स्थापना की थी। यह वह समय था जब माता-पिता अपनी कन्याओं को स्कूल भेजकर पढ़ाते नहीं थे। ऐसे समय में कन्यायों का विद्यालय खोलना एक क्रान्तिकारी कार्य था। वर्तमान में यह जालन्धर का कन्याओं का सबसे बड़ा महाविद्यालय है। अथर्ववेद, सामवेद भाष्यकार तथा अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय जी की धर्मपत्नी माता कुन्ती देवी इसी महाविद्यालय की छात्रा थी। हमारा सौभाग्य है कि हमें पंडित विश्वनाथ विद्यालंकार जी सहित माता कुन्ती देवी जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। अपने इस कार्य के कारण भी महात्मा मुंशीराम जी, जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए, अमर हैं। सन् १८९१ में महात्मा जी की धर्मपत्नी माता शिवदेवी जी का निधन हुआ। इस समय महात्मा ही का वय मात्र ३५ वर्ष का था। इससे आप पर अपने दो पुत्रों तथा तीन पुत्रियों के पालन पोषण का भार भी आ गया था। सभी सामाजिक कर्तव्यों को करते हुए आपने इस दायित्व को भी बहुत कुशलता से निभाया और अपने बच्चों को माता-पिता दोनों का ही प्यार व स्नेह दिया।

महात्मा मुंशीराम जी सन् १८९२ में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए। महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में वर्णित प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के प्रतिनिधि गुरुकुलों की परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए आपने ऋषि दयानन्द के स्वप्नों के अनुरूप गुरुकुल की स्थापना के लिये सन् १८९२ में तीस हजार रुपये एकत्र करने का संकल्प लेकर गृहत्याग कर दिया था। कुछ ही समय में आपका

संकल्प पूरा हो गया और संकल्प से अधिक धनराशि प्राप्त हुई थी। उन दिनों तीस हजार रूपये बहुत बड़ी धनराशि हुआ करती थी। इसी धनराशि के एकत्र होने के पश्चात हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम की भूमि को दान में प्राप्त किया गया था, जहां सन् १९०२ में आपके स्वप्नों का प्रसिद्ध गुरुकुल कागड़ी स्थापित हुआ। आपके समर्पण व योग्यता से यह गुरुकुल दिन दूनी रात चैगुनी उन्नति को प्राप्त हुआ। इसकी प्रसिद्धि को सुनकर इंग्लैण्ड से श्री रैमजे मैकडानल जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल पधारे थे और यहां स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ रहे थे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रशंसा की थी और उन्हें ईसाई मत के संस्थापक ईसामसीह के समान 'जीवित ईसामसीह' बताया था। कुछ समय बाद इस गुरुकुल में भारत के वायसराय श्री जेम्स फोर्ड भी आये थे। गुरुकुल की सफलता को बताने वाले अनेक उदाहरण हैं, परन्तु स्थानाभाव के कारण उनका उल्लेख नहीं कर रहे हैं। इतना अवश्य लिख देते हैं कि इस गुरुकुल से देश को वेदों के बहुत बड़े आचार्य व विद्वान, क्रान्तिकारी, देशभक्त, समाचार पत्रों के सम्पादक, इतिहासकार, आजादी के आन्दोलनकारी आदि मिले हैं।

महात्मा मुंशीराम जी ने सन् १९१७ में मायापुर, हरिद्वार में संन्यास लिया था और नया नाम **स्वामी श्रद्धानन्द** धारण किया था। स्वामी जी ने शिक्षा जगत सहित देश की आजादी, दलितोद्धार, शुद्धि, सामाजिक आन्दोलनों व समाज सुधार के महनीय कार्यों को किया। इनका संक्षिप्त परिचय हम इस लेख में दे रहे हैं। सन् १९०१ में स्वामी जी ने अपनी पुत्री अमृत कला का जाति-बंधन तोड़कर डा. सुखदेव जी से विवाह कराया था। सन् १९०७ में देश में जन-जन की भाषा हिन्दी के महत्व के कारण अपने उर्दू पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' को हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी सन् १९०९ में आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रथम प्रधान बने थे। सन् १९०९ में स्वामी जी ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी। आज भी यह गुरुकुल फल फूल रहा है। स्वामी जी को सन् १९१३ में भागलपुर (बिहार) में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया था। आजादी के इतिहास में दिल्ली में एक अद्भुत घटना घटी थी। सन् १९१९ में ३० मार्च को चांदनी चौक में एक

आन्दोलन के नेतृत्व के समय अंग्रेजों की गोरी सेना की संगीनों के सामने स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सीना तानकर सिंह-गर्जना की थी। वह अंग्रेज सैनिको को बोले थे **'हिम्मत है तो चलाओ गोली'**। इस सिंह-गर्जना को सुनकर गोरे सैनिकों की संगीने नीचे झुक गयी थी। आजादी के इतिहास की यह एक दुर्लभ अद्वितीय घटना है। इस घटना से दिल्ली में सभी भारतवासी प्रसन्न, आह्लादित व रोमांचित हुए थे। स्वामीजी की वीरता के लिए उन्हें सम्मानित करने के लिये ४ अप्रैल, १९१९ को उन्हें दिल्ली की जामा मस्जिद में आमंत्रित कर उसके मिम्बर से उनका सम्बोधन कराया गया था। यहां स्वामी जी ने वेदमंत्र बोल कर हिन्दू व मुसलमानों को देशभक्ति व परस्पर प्रेम का सन्देश दिया था। इसके बाद किसी हिन्दू विद्वान व नेता को यह जामा मस्जिद के मिम्बर से लोगों को सम्वोधन करने का सौभाग्य नहीं मिला।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् १९२४ में गांधी जी के निमन्त्रण पर बेलगाम-कांग्रेस में दर्शक-रूप में भाग लिया था। स्वामी जी ने सन् १९२४ में वायकम (केरल) में जाति-पांति तथा ऊंच-नीच की सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व भी किया था। स्वामी जी ने कर्नाटक, आंध्र तथा चेन्नई प्रान्तों व नगरों की भी ऐतिहासिक यात्रायें की थीं। सन् १९२५ में मथुरा में ऋषि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया था। इसका नेतृत्व भी स्वामी जी ने ही किया। सन् १९२५ में स्वामी जी दक्षिण भारत में वेद प्रचारार्थ गये थे। स्वामी जी के एक शिष्य व उच्चकोटि के वैदिक विद्वान पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी ने जीवन भर दक्षिण भारत में रहकर वेद प्रचार का कार्य किया।

स्वामी जी के दलितोद्धार व शुद्धि के कार्यों से विधर्मी उनके शत्रु बन गये थे। २३ दिसम्बर, १९२६ को एक षडयन्त्र करके एक क्रूर हत्यारे अब्दुल रशीद द्वारा रुग्णावस्था में छल से स्वामी जी पर गोलियों का प्रहार किया गया जिससे वह वीरगति को प्राप्त हुए। ऋषि दयानन्द और पं. लेखराम जी के बाद धर्म के लिये बलिदान होने वाले वे वह तीसरे प्रमुख विप्र योद्धा थे।ऐसे आर्यजगत् के तपोधन, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्दजी को ९८ वें बलिदान दिवस पर शत्-शत् नमन व श्रद्धांजलि!

- १९६, चुक्खुवाला,
देहरादुन-२४८००१
मो.९४१२९८५१२१

- जगह-जगह के शिक्षालयों में संस्कार जागरण -

वैदिक व्याख्यानमाला का शानदार शुभारम्भ

स्कूल व कॉलेज के छात्रों में वैदिक संस्कारों व मानवीय मूल्यों का बीजारोपण होकर वे नेक इन्सान बनें, इस पवित्र उद्देश्य को लेकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान 'वैदिक व्याख्यानमाला' अभियान का गत माह शुभारम्भ हुआ। १ दिसम्बर की प्रातः वेदप्रचाररथ को सभा के पदाधिकारियों ने ओ३म् ध्वजा दिखाकर मंत्रोद्घोष के साथ विदा किया।

इस अभियान में प्रमुख वक्ता के रुप में टाण्डा(जि.वाराणसी-उ.प्र.) से आमन्त्रित युवा वेदधर्म प्रचारक श्री ओमप्रकाशजी योगाचार्य जगह-जगह पर पहुंचकर विभिन्न शिक्षालयों में प्रेरणाप्रद व्याख्यान दे रहे हैं।

पहले दिन माजलगांव (जि.बीड) में चार कार्यक्रम हुए। भारतीय शिक्षा मण्डल द्वारा संचालित सिद्धेश्वर प्राथमिक विद्यालय, सिद्धेश्वर माध्यमिक विद्यालय व सिद्धेश्वर महाविद्यालय में स्वतन्त्ररूप से ३ व्याख्यान समारोह हुए। साथ ही छत्रपती शिवाजी विद्यालय में भी प्रबोधन पर व्याख्यान हुआ। इसके आयोजन में गुरुकुलीय स्नातक प्रा.श्री लक्ष्मीकांतजी शास्त्री, रवीन्द्रजी शास्त्री, सुरेशजी शास्त्री की प्रमुख भूमिका रही। इन चारों विद्यालयों में वैदिक अध्येता पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी ने सरलतापूर्वक मौलिक विचार प्रस्तुत कर छात्रों को वैदिक शिक्षाओं को ग्रहण करने का आवाहन किया। इस अभियान में सभा के भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान ने प्रभावशाली मधुर भजन किये।

माजलगाव के पश्चात् आचार्य श्री ओमप्रकाशजी व्याख्याता के रुप में जुड गये। उन्होंने पहले दिन परली के प्राईवेट कक्षाओं में मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात् वेदप्रचाररथ गंगाखेड पहुंचा। वहां पर ममता विद्यालय, संत जनाबाई विद्यालय में छात्रोपयोगी प्रेरणाप्रद व्याख्यान सम्पन्न हुए। बाद में आगे परभणी, हिंगोली, कलमनुरी, शिऊर, तलणी, निवघा, हदगाव आदि स्थानों के शिक्षालयों में वैदिक शिक्षा प्रचारार्थ व्याख्यान होते रहे। इसके लिए उन-उन आर्य समाजों के पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं का पूरा सहयोग मिलता रहा। आगे भी कार्यक्रम जारी हैं। ३ जनवरी २०२४ तक कार्यक्रम होते रहेंगें।

कन्या गुरुकुल शिवगंज का रजत-जयन्ती महोत्सव

विगत २५ वर्षों से कन्याओं को वेद, संस्कृत एवं वैदिक संस्कृति की शिक्षा प्रदान करने में संलग्न गुरुकुलीय शिक्षा संस्थान आर्ष कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही(राजस्थान) का 'रजतजयन्ती महोत्सव' दि.२७, २८ व २९ अक्टूबर २०२३ को विविध कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया।

इस त्रिदिवसीय समारोह में आर्य जगत के गणमान्य विद्वान, आर्य सन्यासी, मुनिवृन्द, कार्यकर्त्ता तथा विदुषियां सम्मिलित हुई। इस अवसर पर आयोजित वेदपारायण यज्ञ के ब्रह्मपद को चतुर्वेदाचार्यी डॉ.सूर्यदेवीजी ने विभूषित किया। विभिन्न सम्मेलनों व कार्यक्रमों में सर्वश्री स्वामी आर्यवेशजी, ओममुनिजी, आचार्या मैत्रेयी, डॉ.सविता आर्या, प्रो.नरेन्द्रजी धीमान्, प्रो.प्रतिभा पुरन्ध्री, डॉ.प्रशस्यमित्रजी शास्त्री, मुनि सत्यजित आदियों ने सम्बोधित किया। इस महोत्सव पर ध्यान योग शिबिर, ब्रह्मचारिणियों के व्यायाम प्रदर्शन, भव्य शोभायात्रा आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। समारोह में महाशय राजीवजी गुलाटी सपत्नीक उपस्थित रहें। संचालन आचार्य डॉ.धनंजयजी, डॉ.शिवकुमारजी तथा डॉ.मीनाक्षीजी ने किया।

सोमेंद्र शास्त्री का नाम इन्फ्ल्युन्सर वर्ल्ड बुक में दर्ज

परली-वैजनाथ स्थित वैदिक विद्वान डॉ.श्री वीरेन्द्र शास्त्री के सुपुत्र आर्य युवक सोमेन्द्र शास्त्री सम्प्रति योगशिक्षक बनकर योगप्रचार के कार्य में योगदान दे रहे हैं। बीते वर्ष स्वतन्त्रता दिवस पर जयपुर (राजस्थान) के इन्टर नैशनल सेन्टर में 'इन्फ्ल्युन्सर संस्था' द्वारा एक योग प्रशिक्षण प्रतियोगिता

सम्पन्न हुई। इसमें लगभग १४२ योगशिक्षकों ने सहभाग लिया। इन सभी में १ घन्टा ४५ मिनट तक योगा करके सोमेन्द्र शास्त्री ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी के साथ 'इन्फ्ल्युन्सर वर्ल्ड बुक ऑफ रेकॉर्ड' में इनका नाम दर्ज हुआ। इस अवसर पर कम्पनी के मान्यवर अधिकारियों ने सोमेन्द्र को ट्रॉफी, सम्मानपत्र, सुवर्ण पदक, बैच व स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस उपलब्धि पर चि.सोमेन्द्र का आर्यजनों तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक अभिनन्दन एवं अग्रिम सफलता के लिए शुभकामनाएं!

**

टंकारा में १०, ११ व १२ फरवरी को होगा

म.दयानन्द का द्विजन्मशताब्दी महोत्सव सम्मेलन

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द की पावन जन्मभूमि टंकारा (जि.राजकोट) में आगामी दि.१०, ११ व १२ फरवरी २०२४ को म.दयानन्द का २०० वां जन्मोत्सव हर्ष व उल्हासपूर्वक भव्यता के साथ मनाया जा रहा है। इस ऐतिहासिक जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित ज्ञानज्योति पर्व स्मरणोत्सव महासम्मेलन के शुभावसर पर भारतवर्ष की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू प्रमुख अतिथि के रुप में उपस्थिति होगी। साथ ही केन्द्र शासन की ओर से गणमान्य मन्त्रीगण, राज्यपाल, धार्मिक व राजकीय नेतागण, आर्य जगत् के विद्वान, संन्यासी साधु-महात्मा, प्रचारक, गुरुककुलों के आचार्यगण, प्रमुख संगठनों ने नेता आदि पधार रहे हैं। महाराष्ट्र से अधिकाधिक आर्य सज्जन टंकारा पहुंचने के लिए अभी से तैयारियाँ करें!

अतः इस विशाल समारोह में सभी आर्यजनों को पधारने का आवाहन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य, दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के प्रधान तथा डी.ए.वी.कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के चैअरमन पद्मश्री पूनमजी सूरी एवं ज्ञानज्योति महोत्सव आर्यजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारजी आर्य ने किया है। अधिक जानकारी के लिए समीपस्थ स्थानीय आर्य समाजों के पदाधिकारियों से सम्पर्क बनाये रखे।

शोक समाचार

प्रख्यात शिक्षाविद् डा. रामप्रकाशजी का निधन

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक महर्षि दयानन्द , आर्य समाज एवं भारतीय ज्ञान परम्परा की पुण्य सलिला सरिता को प्रवाहित करने वाले प्रसिद्ध वैदिक विद्वान,ओजस्वी वक्ता, राज्यसभा के पूर्व सदस्य, हरियाणा काँग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री, प्रोफेसर डॉ. रामप्रकाशजी का दि.१३ दिसम्बर २०२३ को प्रातः ४:१५ बजे दुखद निधन हो गया। शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के विविध प्रकल्पों में कार्य करने के बाद भी स्वयं के जीवन को एकात्मता से उन्होंने महर्षि दयानंद के वैदिक ज्ञान विस्तार मिशन के लिए अपना जीवन समर्पित किया। जीवनभर अपनी ऊर्जावान् लेखनी एवं अपूर्व वाक् शक्ति से इस मुख्य उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आपने स्वयं को सर्वात्मना समर्पित कर दिया। जीवन के अन्तिम क्षण तक (८४ वर्ष) साधना के लिए समर्पित ऐसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। उनका व्यक्तित्व ईश्वर भक्ति, उत्साह एवं आशा से परिपूर्ण था। आर्य जगत को उनके जाने से क्षति हुई है।

पं.नन्दलालजी 'निर्भय' को पुत्रशोक

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक कविरत्न श्री पं.नन्दलालजी निर्भय के एकमात्र पुत्र श्री जयदेव आर्य का गत १२ अक्टूबर २०२३ को हृदयाघात के कारण दुखद निधन हुआ। मृत्यूपरान्त उनकी आयु मात्र ३८ वर्ष की थी। एक वाहन दुर्घटना के कारण वे पिछले कुछ दिनों से वे बिमार चल रहे थे। वे अपने पश्चात् माता-पिता, पत्नी, एक पुत्र व एक कन्या को छोडकर संसार से विदा हो गये।

श्री जयदेवजी धार्मिक, सुस्वभावी एवं मिलनसार थे। भजनोपदेशक के रूप में आपने जगह-जगह घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। उनके पार्थिव शरीर पर

पैत्रिक ग्राम बहीन (जि.पलवल-हरियाणा) में शोकसंतप्त वातावरण में पूर्णतया वैदिक संस्कार किये गये। शवयात्रा में हजारों व्यक्तियों ने भाग लेकर अपनी संवेदनाएं प्रकट की। दि.२२ अक्टूबर को परिवार में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

विजयकुमार गुप्ताजी नहीं रहे

आर्य समाज परभणी के मार्गदर्शक एवं पूर्व प्रधान श्री विजयकुमारजी मदनलालजी गुप्ता(अग्रवाल) का दि.६ दिसम्बर २०२३ को रात्रि ८.१० बजे हृदयाघात से दुखद निधन हुआ। उनकी आयु ६३ वर्ष की थी।

वे अपने पश्चात् तीन पुत्र, एक कन्या, दामाद, बहुएं तथा पौत्र-पौत्रियों से भरा परिवार छोडकर संसार से विदा हुए। गत कई वर्षों से वे मधुमेह व किडणी की बिमारी से रुग्णशय्या पर थे। पिछले तीन वर्ष पूर्व उनकी धर्मपत्नी का भी निधन हुआ।

श्री गुप्ताजी सही अर्थों में प्रखर ईश्वरभक्त, तत्त्वनिष्ठ आर्यसमाजी एवं दानशूर सामाजिक कार्यकर्त्ता के रुप में पहचाने जाते थे। आर्य विद्वानों के पावन सत्संग के फलस्वरूप उनपर वैदिक विचारों का रंग चढा और वे कट्टर आर्य समाजी बन गये। आरम्भ के दिनों में उन्हीं के 'अग्रवाल टेंट हाऊस' में आर्य समाजों के श्रावणी वेदप्रचार उत्सव, आर्य पर्व एवं साप्ताहिक सत्संग आदि कार्यक्रम चलते रहें। शहर में आर्य समाज को बढाने में उनका सर्वतोपरी योगदान रहा है। आध्यात्मिक विचारों के कारण वे दृढनिष्ठ रहे। जीवन में कितने भी संकट आये तो घबराये नहीं। उनके पार्थिव पर दूसरे दिन सायं.५ बजे पूर्ण वैदिक पद्धति से अंतिम संस्कार किये गये। सर्वश्री पं.वीरेन्द्रजी शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, दयानन्द शास्त्री, दिगंबर शास्त्री देवकते, डॉ.धनंजय औंढेकर आदियों ने वैदिक मंत्रोद्घोष के साथ यह अंतेष्टि कर्म पूर्ण किया। बाद में घर पं.दयानंद शास्त्री के पौरोहित्य में शांतियज्ञ सम्पन्न हुआ।

उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति व सद्गति हेतु प्रार्थना!
उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाजन्लियाँ व शोकसंतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं..!

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

सत्यमेव जयते!

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्।।

(मुण्डकोपनिषद-३/१/६)

अर्थ – सत्याचाच विजय होतो, असत्याचा कदापी नव्हे! सत्यानेच मोक्षप्राप्तीचा मार्ग सर्वत्र पसरला आहे, ज्या मार्गाने खरोखरच निष्काम ऋषी-मुनी जातात व जिथे की तो सत्याचा श्रेष्ठ असा समुह ब्रह्म म्हणून मानला जातो.

* दयानंद वाणी *

पौराणिक भाकड कथांवर विश्वास नको

वाः! वाः! भागवत रचणाऱ्याची अक्कल काय वर्णावी? भल्या माणसा! असल्या भाकड कथा लिहिताना तुला थोडी देखील शरम का वाटली नाही? तू तर ठार आंधळा बनलास की! स्त्री-पुरुषांच्या रजोवीर्याच्या संयोगाने माणसे जन्माला येतात. परमेश्वराच्या सृष्टीविरुद्ध पशु-पक्षी, साप वगैरे कधीही उत्पन्न होऊ शकत नाहीत.... या पौराणिक लोकांनी रचलेल्या अत्यंत असंभव अशा भाकड कथांवर अजूनही काही लोकांचा विश्वास असतो. ही किती दुःखाची गोष्ट आहे? या साफ खोट्या गोष्टी आंधळे पुरोहित आणि आतले व बाहेरचे डोळे फुटलेले त्यांचे चेले ऐकतात व त्यावर विश्वास ठेवतात. ही केवढी आश्चर्याची गोष्ट आहे? ही माणसे आहेत की इतर कोणी? ही भागवतादी पुराणे रचणारे गर्भातच किंवा जन्मताच का नष्ट झाले नाहीत? किंवा जन्मास येतानाच का मेले नाहीत, ते तसे झाले असते तर आम्ही पापांपासून वाचलो असतो आणि आर्यावर्त देशाची अनेक दुःखे टळले असती. (सत्यार्थ प्रकाश-११ वा समुलास)

द्विजन्मशताब्दी एका युगप्रवर्तकाची!

- ले. रमेश तु.ठाकूर (निवृत्त मु.अ.)

पुण्यभू गुजरातच्या टंकारा गावी १९९ वर्षांपूर्वी महर्षी दयानंद नामक एका महान युगपुरुषाचा जन्म झाला. 'मूलशंकर ते दयानंद' हा दिव्य क्रांतिकारी प्रेरक जीवनप्रवास! जीवनभर या महात्म्याने वेदनिष्ठा जपली. पाच सहस्र वर्षांपासून जगात पसरलेला अज्ञान, अविद्या व अनैतिकतेचा काळोख आपल्या प्रखर वेदज्ञान साधनेने संपवून पुनश्च या भूतलावर सत्यज्ञानाची ज्योत प्रज्वलित केली. स्वामीजींनी पेटवलेली विशुद्ध वैदिक ज्ञानाची पणती सध्याच्या अंधारयुगात विझण्याच्या मार्गावर आहे. ही पणती जपून ठेवणे काळाची खरी गरज आहे. स्वामीजींची प्रेरक जीवनज्योत मालवून १४० वर्षे झाली. सध्या त्यांची द्विजन्मशताब्दी साजरी करतांना त्यांनी पेटवलेल्या पणत्या अधिक धूसर होत आहेत. या पणत्यांना आता मशाली बनाव्या लागतील. आर्य समाजी बांधवांनो आता आपली या जगाला खरी गरज आहे. अनैतिकतेचे वारे चोहिकडून मोठ्या प्रमाणात वाहत आहेत. हे थोपविण्यासाठी वेदज्ञानाच्या प्रकाशाकडे वळण्याची गरज आहे. वेदांचा प्रकाश! स्वामी दयानंदांनी दाखविलेल्या सत्य वैदिक ज्ञानाचा प्रकाश! वेदप्रतिपादित वैज्ञानिक तत्त्वज्ञानाचा प्रकाश!

अनेक संतांनी-शास्त्रज्ञांनीही सत्य जगासमोर ठेवण्यासाठी प्राणार्पण केले. मात्र स्वामीजींनी प्राण त्यागातून वैदिक सत्य ज्ञानाचा संदेश दिला. किती दिवस आम्हीच आमची फसवणूक करणार आहोत? 'सत्याचा स्वीकार आणि असत्याचा त्याग' हाच स्वामीजींचा खरा संदेश आहे. आर्य समाजाच्या नियमातच यांचा अंतर्भाव केला आहे. खरे तर हाच पर्याय आहे साऱ्या मानवजातीला तारण्याचा! या जगात कोणीही आपल्या सोबत मत-पंथ व जाती घेऊन येत नाही. आम्हीच व आमच्यातल्याच काहींनी पंथ व जाती निर्माण केल्या. स्वतःच्या स्वार्थासाठी ब्राह्मण, राजपूत, जैन, मराठा, पारसी, लिंगायत, मारवाडी, बौद्ध, महार, मांग, चांभार, ढोर, सुतार, लोहार, माळी, कोळी, फुलारी, खाटीक, मुसलमान, ख्रिश्चन, वंजारी, रंगारी, लमाण, कोळी आदि-आदि... कितीतरी! आपल्या शरीराच्या कोणत्या भागावर याचा

उल्लेख जन्मतः आलेला आहे? कशावरुन एखाद्याची जात ठरवणार? विज्ञानाने जगातील सर्व मानवाची एकच जात मानली आहे. Homo sepians. स्वामी दयानंदांनीही मानवाची एकच 'मानव' जात मानली. या जातीच्या पडद्यात गुडाळून सर्वांना अज्ञानात गाडण्याचा महाभयंकर प्रकार केला. विज्ञानाला तर हे मूळीच मान्य नाही. पण 'नरेच केले हीन किती नर!' आम्हीच आमच्या बांधवांना, आमच्या माता-भगिनींना अंधाराच्या, अज्ञानाच्या खायीत लोटून दिले आहे. समाजात भ्रम फैलावण्याचे कामही आपणच करतो आहोत. आम्हीच हे सांगत सुटलो आहोत की, 'उद्या विठोबाच्या मूर्तीत प्राणप्रतिष्ठा करावयाची आहे.' आम्ही त्या निर्जीव वस्तूत परमेश्वराचे प्राण ओतणार आहोत. त्या परमेश्वराच्या असीम कृपेने हे विश्व, विश्वांतरे निर्माण झाली. नानाविध जीव निर्माण झाले. त्या परमेश्वराच्या प्राणाची प्रतिष्ठा हा यःकश्चित् माणूस करणार? केवढे मोठे हे आश्चर्य! म्हणजे आम्ही त्या परमेश्वरापेक्षाही मोठे! अजब आहे. आजच्या विज्ञानाच्या जगातही आम्ही हे सांगण्याचे धाडस करीत आहोत.

एकीकडे हीच मंडळी म्हणतात, की परमेश्वर सर्वव्यापक, सर्वाधार, सर्वेश्वर आहे. दयालू, दुःखनाशक, न्यायकारी, निर्गुण, सर्वांचा निर्माता असेही म्हणतात. यावर आम्ही नको का विचार करायचा? सामान्यांना वेड्यात काढण्याचा हा प्रकार आहे. हा असा प्रकार लक्षात घेऊनच स्वामीजींनी पाखंड खण्डिनी पताका हाती घेतली. गुरुवर विरजानंदांची आज्ञा शिरसावंद्य मानून हा निर्णय घेतला. उच्चतम समजल्या जाणाऱ्या धर्ममार्तण्डांना जाहीर आव्हाने देऊन नामोहरम केले. राजे-महाराजे अयोग्य मार्गाकडे वळत असलेले पाहून त्यांनाही समज देण्याचे धाडस स्वामीजींनी केले. याबरोबरच स्वराज्याची संकल्पना रुजवण्याचेही काम केले. स्वधर्मी व परधर्मियांनाही ज्ञानाची खरी ज्योत दाखवली. आर्य समाजाची स्थापना यासाठीच केली. ती आता जपून ठेवण्याची व पणती मालवू न देण्याची गरज आहे.

छत्रपती शिवरायांनी साऱ्यांना सोबत घेऊन जाती-पातीचा विचार लोकांच्या मनातून काढून टाकला. सर्व रयतेची मने एकत्रित केली. यामुळेच लोकांनी शिवरायांसाठी समोर दिसणाऱ्या मृत्यूलाही कवटाळले. 'शिवाजी राजा वाचला पाहिजे', असे त्यांना वाटले.

बाजी, तानाजी, सूर्याजी, यसाजी अशी कितीतरी नावे घेता येतील!

भारताच्या स्वतंत्र्यप्राप्तीला आज ७५ वर्षे झाली. हैद्राबाद राज्य, गोवा आदींना उशीरा स्वातंत्र्य मिळाले असले तरी सत्तरी पार झालीच आहे. तरीही आम्ही अंधश्रद्धेच्या खोल गर्तेत आहोत. अशा बाजारबुणग्या महाराजांना शासनकर्त्यांचे कवच लाभत चालले आहे. स्वामीजींनी अशा राजे महाराजांची तोंडावर निर्भत्सना केली होती. या सगळ्या आव्हानांना आर्य समाजाला सामोरे जावयाचे आहे.

आजच्या तंत्रज्ञानाच्या युगात देखील जातीभेद कमालीचे वाढत चालले आहेत. स्त्री-पुरुष समानता अजूनही कागदावरच आहे. महिला स्वकर्तृत्वाने पुढे येण्याचा प्रयत्न करीत आहेत. असे असले तरीही स्त्रीविषयक दृष्टिकोन बदललेला नाही. पुरुषांपेक्षा स्त्रियांना रोजगार कमी दिला जातो.

देवी-देवतांचे प्रमाण वाढत आहे. आम्ही देव्हाऱ्यातल्या देवीच्या समोर नमल्याचे नाटक करतो आणि घरी पत्नीच्या डोक्यात घाव घालून तिचा खून करायला मागे पुढे पाहत नाही. नवरा मेला की तिला कपाळीचा कुंकू पुसायला भाग पाडले जाते. बांगड्या फोडल्या जातात. का तर तिला आता सुंदर राहण्याचा अधिकार नाही. ती आता सौभाग्यवती नाही. महत्वाच्या समारंभात आजही विधवांना बाजूला सारले जाते. महिला राष्ट्रपतींना संसदभवनाच्या उद्‌घाटनाला बोलावले जात नाही, हे किती भयानक आहे. स्वीदाक्षिण्याच्या नुसत्या गप्पा मारल्या जातात.

महाराष्ट्रात आजही भानामती करीत असल्याचे दाखवण्यासाठी लिंबू, सूया, मिरच्या ई. दारात टाकत असल्याचे टिव्हीवर दाखवले जाते. गंमत म्हणजे अशांना शिक्षा देखील होत नाही. अंधश्रद्धा कमालीची वाढत आहे. या सर्वांना 'अंनिस' ही सामाजिक संघटना जाहीर आव्हान देत असते. पण याकडे शासनासकटच सर्वजण कानाडोळा करताना पाहावयास मिळत आहे. दाभोळकरांचा याच कारणासाठी दिवसा-ढवळ्या गोळ्या घालून खून केला जातो, पण त्याचा शोध अजूनही लागत नाही. सामान्य नट-नट्यांच्या मृत्यूंची मात्र सखोल चौकशी केली जाते. काय हा दैवदुर्विलास?

ज्या यज्ञास स्वामीजींनी पुनर्जीवित केले, ज्यांचे वैज्ञानिक स्वरुप (प्रायोगिक) जगासमोर मांडण्याचा

डॉ.सत्यप्रकाश (विद्यापीठातील रसायनशास्त्राचे प्रमुख) प्रयत्न करतात. त्याचे प्रसिद्धीकरण होत नाही. चित्र-विचित्र पद्धतीने यज्ञ केले जात असल्याचे प्रसार माध्यमांकडून दाखवले जाते. अशास्त्रीय 'यज्ञ' लोकांसमोर येत आहेत. असा हा सगळा प्रकार! थोडक्यात, आज सर्व बाजूने सत्यावर असत्याचे वादळ घोंगावत आहे. चुकीच्या पद्धतीने असत्यरुपी वीजांचा कडकडाट होत आहे. अशा संक्रमण युगात आता आर्य समाज खडबडून जागा होण्याची गरज आहे. ही सर्व आव्हाने स्वीकारण्याचे सामर्थ्य आपले आराध्य महापुरुष महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या २०० व्या जयंती वर्षाच्या निमित्ताने सर्वांच्या अंतरंगी रुजले पाहिजे. यातच खरी दयानंद-द्विजन्मशताब्दी साजरी करण्याची सार्थकता!

शेवटी सुज्ञ व जागृत आर्य जनांसाठी कवीच्या शब्दांतून एवढेच सांगावेसे वाटते -

'आले चहू दिशांनी तुफार विस्मृतीचे
नाते जपून ठेवा अंधार फार झाला।
थोडा उजेड ठेवा अंधार फार झाला
पणती जपून ठेवा अंधार फार झाला।।'

- गारखेडा परिसर, छ.संभाजीनगर
मो.९४२३१७८८०३

संभाजीनगरात 'शुद्धी संस्कार' संपन्न

छत्रपती संभाजीनगर येथील स.भु. कॉलनी आर्य समाजातर्फे दि.८ नोव्हेंबर रोजी एका मुस्लिम परिवाराचा शुद्धी संस्कार पार पडला. अहमदनगर जिल्ह्यातील श्री जमील शेख यांनी स्वेच्छेने आपल्या कुटुंबाच्या सर्व ९ सदस्यांसह वैदिक धर्माचा स्वीकार केला व आपले नाव शिवराम आर्य तर आपल्या पत्नीचे नाव सीता आर्या हे धारण केले. त्यांच्या इतरही मुलां- मुलींची नावे बदलण्यात आली. यावेळी पार पडलेल्या शुद्धी यज्ञाचे पौरोहित्य या आर्य समाजाचे मंत्री श्री दयारामजी बसैये व कोषाध्यक्ष श्री जोगेंद्रसिंह चव्हाण यांनी केले.

या शुद्धी संस्कारानंतर एका वृत्तवाहिनीला दिलेल्या मुलाखतीत श्री शिवराम यांनी आपण कोणाच्याही दबावाला बळी न पडता स्वेच्छेने सनातन वैदिक धर्म स्वीकारत असल्याचे जाहीर केले. यावेळी त्यांनी सांगितले की पूर्वीपासूनच आमचे राहणीमान व पूजाअर्चा इत्यादी विधी हिंदू परंपरेप्रमाणेच पार पडत असतात. त्याचबरोबरच नेहमी हिंदू बांधवांचेच सानिध्य लाभत राहिले. त्यामुळे आम्हा सर्व कुटुंबीयांच्या मनात आर्य (हिंदू) धर्माविषयी पूर्ण आस्था व श्रद्धा असल्याने आम्ही अगदी आनंदाने वैदिक धर्म स्वीकारत आहोत.

यज्ञाचा पर्यावरणावरील सुपरिणाम

– डॉ.विनोदकुमार 'वेदार्य'

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।
(गीता–३/१४)

यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते।
एवं सर्वाणि भुतान्यग्निहोत्रमुपासते।।
(मुण्डकोपनिषद–१/२/५)

ऋग्वेदातील एका मंत्रामध्ये यज्ञाच्या प्रथम दिवशी ब्रह्मा आणि यजमान यांच्या प्रश्नोत्तराचा एक प्रसंग आहे. तेथे ब्रह्मा यजमानाला विचारतो की ''..... पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।'' (ऋ.१/१६४/३४) अर्थात् जेथे ज्या ठिकाणी सर्व कांही बंधनात बांधले जाते, ते केंद्र कोठे आहे? काय आहे ? या प्रश्नाच्या उत्तरादाखल यजमान म्हणतो की, ''..... अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।'' (ऋ.१/१६४/३५) अर्थात् हे यज्ञच संपूर्ण विश्वाची नाभी आहे. चतुर्वेदभाष्यकार आचार्य सायण यांनी ''अयं यज्ञो भूतमात्रस्य संनहनम्। तत्रैव वृष्ट्यादिसर्वफलोत्पत्तेः सर्वप्राणिनां बन्धकत्वात्।'' अर्थात् यज्ञाच्या माध्यमातून वृष्टी आदी व वृक्ष–वनस्पती इत्यादी समस्त विश्व सम्यक प्रकारे फुलते फळते आहे, त्याच प्रकारे प्राणिसमूह यज्ञाच्या लाभाने लाभान्वित होतो.

'यज्ञ' शब्दाची व्याख्या :–

यज्ञ शब्दाची व्याख्या करण्यापूर्वी त्याची व्युत्पत्ती आणि निरुक्ती पाहण्याची आवश्यकता आहे. यौगिक प्रक्रियेमध्ये यज्ञ शब्दाची धात्वर्थ सिद्धी ''यज् देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु'' धातुपाठाच्या 'यज्' धातूला ''यजयाजयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्।'' (अष्टाध्यायी ३/३/९०) या पाणिनीय सूत्रानुसार 'नङ्' प्रत्यय झाल्यावर होते. येथे आचार्य पाणिनी यांना असा अर्थ अभिप्रेत आहे की, ''असे कर्म ज्यामध्ये देवपूजा, विद्वानाची संगती आणि दान या तिन्ही क्रिया एकेकट्या किंवा सामुहिक रुपात उपस्थित असतात, ते कर्म म्हणजे यज्ञ होय.'' वेदांची निरुक्तीपरक व्याख्या करणाऱ्या आचार्य यास्क यांनी यज्ञाचे विविध अर्थ सांगताना म्हटले आहे की, ''प्रख्यातं यजति कर्म इति नैरुक्ताः यांचो भवतीति वा, यजुंषि एवं नयन्ति इति वा।'' (निरुक्त–३/४/१९)

शतपथ ब्राह्मण या ग्रंथामधील यज्ञाचा बहुव्यापी अर्थाचा अभ्यास करुन सुप्रसिद्ध विद्वान पं.बुद्धदेव विद्यालंकार

लिहितात की, "सामुदायिकं योगक्षेममुद्दिश्य समुदायाङ्गतया क्रियमाणम् कर्म यज्ञः।"(शतपथ के दशपथ) अर्थात् समुदायाच्या किंवा समाजाच्या कल्याणाच्या इच्छेने समुदायाच्या एखाद्या अंगाद्वारे केले जाणारे कर्म म्हणजे 'यज्ञ' होय.

यज्ञ मीमांसाकार यज्ञाच्या अर्थविस्ताराकडे संकेत करीत व्याख्या सांगतात की, "येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्ण विश्वकल्याणं भवेदाध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकतापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तत् यज्ञपदाभिधेयम्।" अर्थात् ज्या पवित्र कर्मानि संपूर्ण विश्वाचे कल्याण होऊ शकते आणि संपूर्ण विश्वाच्या आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक कष्टांचे मूलोन्मूलन अतिसरलतेने होते, ते कर्म यज्ञ या पदाने जाणले जाते. या प्रकारे उपरोक्त व्याख्येनुसार आपण असे म्हणू शकतो की, 'ते कर्म की ज्याने दैविक शक्तींचे पोषण, विद्वत्समाजाचा सन्मान आणि सं[illegible] विश्वाच्या जड-चेतन पदार्थांच्या कल्या[illegible]ची कामना अभिप्रेत असते, तेच कर्म यज्ञ आहे.'

प्राचीन भारतामध्ये यज्ञ प्रत्येक कर्म, प्रत्येक वेळी, प्रत्येक लाभाशी जोडलेले होते. यासाठी शास्त्रीय ग्रंथामध्ये यज्ञाचे विधान अत्यंत विस्ताराने प्राप्त होते. गौतमधर्म(सूक्त-८/८) या धर्मसूत्रामध्ये ७ पाकयज्ञ, ७ हविर्यज्ञ, ७ सोमयज्ञ यांच्या प्रकार-उपप्रकार इत्यादी २१ यज्ञांचे वर्णन आहे. एतरेय ब्राह्मण ग्रंथात (२/३) यज्ञाचे पाच प्रकार वर्णिले आहेत. तर कात्यायन श्रौतसूत्रांमध्ये तेरा यज्ञांचे वर्णन आहे. मनुस्मृतीच्या तिसऱ्या अध्यायात महर्षी मनुंनी अपरिहार्य असे पाच दैनिक यज्ञांचे विधान केले आहे. त्यांना महायज्ञ मानतात. 'पंचैतान्तु महायज्ञान् यथाशक्तिं न हापयेत्। अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो देवो बलिर्भौतो नृयज्ञो अतिथिपूजनम्।।' योगेश्वर श्रीकृष्ण देखील अन्य पाच यज्ञांचा उल्लेख करतात- "द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योग यज्ञास्तथापरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः।"(गीता-४/२८) श्रीमद्भगवद्गीतेत प्रचलित यज्ञांना सात्विक, राजसिक आणि तामसिक यज्ञांमध्ये वर्गीकृत केले आहे.

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
याष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्विकः।।
(गीता-७/११)

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्।।

(गीता-७/१२)

''विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणाम्।
श्रद्धारहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।।''

(गीता-७/१३)

गृह्यसूत्रकार सर्व प्रचलित यज्ञांना अन्य तीन प्रकारात वर्गीकृत करतात. नित्य, नैमित्तिक आणि काम्य! नित्य- पाच महायज्ञ म्हणजेच ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ व अतिथी यज्ञ! नैमित्तिक म्हणजे-सोळा संस्कारांचे यज्ञ, ऋतू यज्ञ, नवान्न यज्ञ इत्यादी, तर काम्य म्हणजे विशेष कामनेने केले जाणारे यज्ञ जसे की वर्षेष्टी यज्ञ, पुत्रेष्टी यज्ञ इत्यादी.

पर्यावरण आणि अग्निहोत्र यज्ञ :-

या प्रकाराच्या विविध यज्ञांमध्ये सुद्धा सामान्य माणसासाठी अनिवार्य अग्निहोत्र अत्यंत महत्त्वाचा यज्ञ प्रकार आहे. सर्वांनी मरेपर्यंत अग्निहोत्र करीत राहावे, असे शतपथ ब्राह्मण ग्रंथात(१२/४/१/१) म्हटले आहे. ''एतद्वै जरामर्यं सत्रं यदग्निहोत्रम्। जरया ह वा मुच्यते मृत्युना वा।।'' याच ग्रंथामध्ये अग्निहोत्राला सर्व यज्ञांचे मुख मानले आहे. ''मुखं वा एतद्यज्ञानां यदग्निहोत्रम्।''(३/१/८/२) जैमिनीय ब्राह्मण ग्रंथामध्ये (१/९) अग्निहोत्राला सर्व दोषांपासून मुक्त करणारे म्हटले आहे-'सर्वस्मात्पाप्मनो निर्मुच्यते स य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति।।'

पर्यावरण शुद्धीमध्ये यज्ञाचे योगदान:-

प्राचीन भारतात प्रत्येक ऋतूच्या आरंभी ऋतू यज्ञ व्हायचे. यांनाच 'चातुर्मास यज्ञ' असेही म्हटले जायचे. या प्रकारच्या यज्ञामुळे प्रत्येक ऋतू परिवर्तनामुळे होणाऱ्या रोगादींचे शमन पूर्वीच व्हायचे. म्हणूनच या यज्ञांना 'भैषज्य यज्ञ' म्हणजेच औषधी यज्ञ म्हटले जायचे. ''भैषज्ययज्ञा वास्तु यच्चातुर्मास्यानि। ऋतुसन्धिषु व्याधिर्जायते, तस्मादृतुसन्धिषु प्रयुज्यते''(गोपथ ब्राह्मण-३/१/११)

जवळपास एकशे अठ्ठेचाळीस वर्षांपूर्वी पुणे येथील भिडेवाड्यात आयोजित ऐतिहासिक व्याख्यानात वेदोद्धारक महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी औद्योगिक क्रियाकलापांमुळे उत्पन्न विषम अवस्थेचे निवारण करण्यासाठी अग्निहोत्रादी यज्ञ करण्याचे विधान केले होते. आपल्या भाषणात ते म्हणतात- ''इन दिनों होम के न्यून होने से बार-बार वायु बिगड रही है, सदा विलक्षण रोग उत्पन्न होते जा रहे हैं।.... पहले आर्य लोगों का ऐसा सामाजिक नियम था कि प्रत्येक प्रातःकाल स्नानकर सोलह

आहुति देता था, क्योंकि प्रातःकाल में मलमूत्रादिकों की दुर्गन्ध उत्पन्न होती थी, वह प्रातःकाल के हवन से दूर होती थी। इसी तरह सायंकाल में हवन करने से दिनभर की जमा हुई जो दुर्गंधि उत्पन्न होती थी, उसका नाश होकर रात भर वायु निर्मल और शुद्ध चलती थी।... सुवृष्टि और वायु शुद्धि होम हवनादि से होती है, इसलिए होम करना चाहिए।''(पुणे प्रवचन-२० जून १८७५)

महर्षी दयानंद सरस्वती आपल्या यजुर्वेद भाष्यामध्ये सुद्धा वायू व वृष्टीच्या शुद्धतेसाठी यज्ञाच्या अनुष्ठानाचे महत्त्व सांगतात, ''जैसे यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और जल की शुद्धि और पुष्टि होती है, वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती।''

प्रदूषण निवारणामध्ये उपयोगी यज्ञ:-

ज्यांना 'महाराष्ट्र वाल्मिकी' म्हणून ओळखले जाते असे प्रख्यात गीतकार ग.दि.माडगुळकर आपल्या एका भक्तिगीतात म्हणतात -

''माती, पाणी, उजेड, वारा। तूच मिसळशी सर्व पसारा। आभाळच मग ये आकारा।।''

पृथ्वी(माती), आप (पाणी), तेज (उजेड), वायू(वारा) आणि आकाश (आभाळ) हे पाचच महाभूते मानली जातात. आज-काल मृत्तिका प्रदूषण (जमिनीची धूप), जल प्रदूषण, वृष्टी प्रदूषण(आम्ल वर्षा/अतिवृष्टी/अनावृष्टी),आकाश-प्रकाश प्रदूषण(शहरात तारे मोजता न येणे), वायू प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण, अन्न प्रदूषण (भेसळ), दूध प्रदूषण, औषध प्रदूषण, रंग प्रदूषण, किरणोत्सारी प्रदूषण असे अनेक प्रकारचे प्रदूषण पाहावयास मिळतात. धूर्त व पाखंडी लोक हे तर मोठ्या प्रमाणावर विचार प्रदूषण तसेच आचार प्रदूषण सुद्धा करतात. या सर्व प्रदूषण प्रकारांवर 'यज्ञ' हाच एकमेव उपाय आहे, हे विज्ञानाने सुद्धा सिद्ध केले आहे.

प्रदूषण निवारणामध्ये यज्ञाच्या योगदानाबाबत सर्वात महत्त्वाचे कार्य मानवासहित सर्व प्राण्यांचे रोगनिवारण करणे आहे. यज्ञामुळे आपल्या वातावरणातील अनेक रोगकारक विषाणू, जीवाणू, कीटाणू तर नष्ट होतातच. पण त्याचबरोबर यज्ञशेष (भस्मा)तून देखील अनेक प्रकारचे मलम तयार केले. मुंबई येथील जीवाणू वैज्ञानिक डॉ.मोंडकर, चंद्रशेखर आझाद कृषी विद्यापीठ, कानपूर येथील रोगाणू विज्ञान विभागातील डॉ.व्ही.आर.गुप्ता व डॉ.आर.व्ही.मिश्र, दिल्ली येथील

सेनेतील डॉ.डी.वी.के.राव, कर्नल डॉ.आर.एस.तिवारी, एम.जे.पी.कृषी विद्यापीठ, पुणे येथील डॉ.व्ही.जी. भुजबळ, डॉ.वसंत परांजपे, अमेरिकेचे डॉ.क्रीस्तोफेर वर्ड, डॉ.पीटर टोमकिन्स, डॉ.जॉन ब्राउन, डॉ.वैरी रेय्नर, डॉ.एन्ड्रू जक्सन, पोलंड येथील डॉ.एस्त्वीठ मेल्लेका इत्यादी वैज्ञानिकांनी आपल्या प्रयोगातून सिद्ध केले आहे की, यज्ञामुळे अनेक रोगांचा उपचार सहजपणे करता येतो.

अमेरिकेतील वाशिंग्टन येथील अग्निहोत्र विद्यापीठातील प्राध्यापकांनी आपल्या प्रयोगांचे निष्कर्ष देताना लिहिले आहे की, ''यज्ञाच्या सुगंधाद्वारे अमेरिकेतील पिकांचे नुकसान करणाऱ्या 'आलुवीनी' नावाच्या जीवाणूला संपूर्णपणे नष्ट करणे शक्य झाले आहे. या प्रयोगानुसार यज्ञधूम्राद्वारे आठ किलोमीटरच्या परिसरातील वायू प्रदूषण संपले असून रोगाणू-कीटाणू नष्ट करून त्या क्षेत्रातील पिकांचे प्रमाण वाढले आहे.'' (नवनीत मासिक, मुंबई-१८८१)

निष्कर्ष रुपाने आपण सांगू शकतो की, जर आपण पुन्हा यज्ञ संस्थेचे पुनरुज्जीवन केले, तर आम्ही यज्ञांद्वारे नक्कीच भूतकालीन परमवैभव प्राप्त करू शकतो आणि या भारतवर्षाला पुन्हा विश्वगुरु बनवू शकतो. यात कुठली ही शंका असू नये.

हिंदी विभाग प्रमुख, व्यंकटेश महाजन
वरिष्ठ महाविद्यालय, धाराशिव
- मो.९२७०००७२१

जागृती तिवारीची राष्ट्रीय नेमबाजी स्पर्धेसाठी निवड

सभेचे उपप्रधान व किल्लेधारूर आर्य समाजाचे प्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी यांची नात कु.जागृती अमरजित तिवारी हिची राष्ट्रीय नेमबाजी स्पर्धेसाठी निवड झाली आहे. दि.१८ व १९ ऑगस्ट दरम्यान अहमदाबाद (गुजरात) येथे पार पडलेल्या ६ राज्यांच्या दहाव्या पश्चिम विभागीय नेमबाजी स्पर्धेत ३४९ गुण मिळवून हे मोठे यश संपादन केले.

अवघ्या १४ वर्षांची इयत्ता आठवी वर्गात शिकणारी ही शूरकन्या उत्कृष्ट पिस्तूल नेमबाज असून आतापर्यंत ती जिल्हा, राज्य व विभागीय पातळीवर जिंकत आली आहे. या यशाबद्दल महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री राजेंद्र दिवे व वेदप्रचार अधिष्ठाता डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी उपप्रधान प्रमोदकुमारजी तिवारी व इतर पदाधिकाऱ्यांनी धारूरला जाऊन कु.जागृतीला शुभाशीर्वाद देऊन अभिनंदन केले.

- आक्षेपांना उत्तर -

वैदिक शास्त्रात जातीपंथ नाहीतच..!

- प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

दै.लोकसत्ता या अग्रगण्य वृत्तपत्राच्या दि.२९ ऑक्टोबर २०२२ रोजीच्या अंकात 'कास्ट सिस्टम इन इंडिया.....!' हा लेखी प्रकाशित झाला. लेखक सुनील सांगळे यांनी लिहिलेल्या ग्रंथावरील श्री प्रशांत रूपवते यांचे लेख स्वरुपातील हे परीक्षण होते. लेखकाने जातिव्यवस्थेचा मूलाधार वेदशास्त्रे असून नंतरच्या व्यवस्थेला हेच ज्ञानग्रंथ जबाबदार असल्याचे नमूद केले आहे. लेखकाने केलेले हे विवेचन पूर्वाग्रहांवर आधारित ग्रंथांवरुन झालेले आहे.

खरे तर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हे चारही वेद हे अपौरुषेय असून सृष्टीच्या आदिकाळात अग्नी, वायू ,आदित्य, अंगिरा या चार ऋषींच्या अंतःकरणात ते प्रकाशित झाले आहेत. समग्रज्ञानाचे अधिष्ठान म्हणजेच वेद किंवा श्रुती होय. अनेक पौर्वात्य व पाश्चिमात्य विद्वानांनी, संतांनी व वैज्ञानिकांनी वेदांना विशुद्ध ज्ञान-विज्ञानाचे आदिमूळ मानून सर्वंकष बाबतीत वेदांना प्रमाण मानले आहे. याच वेदात सामाजिक व्यवस्थापन सुरळीतपणे चालावे, यासाठी स्वभाववैशिष्ट्यांवर आधारित वर्णव्यवस्था प्रतिपादिली आहे. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र या चार वर्णांचा आधार जन्मानुसार कदापी नव्हे, तो तर गुण, कर्म व स्वभावानुसारच. आजकाल देखील आपण शासकीय कार्यव्यवस्थेत श्रेणीच्या माध्यमातून प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ अशा चार रूपात विभागणी करतो.

वर्ण म्हणजे जात किंवा धर्म नव्हे ! वृञ् (वरणे, निवडणे) या संस्कृत धातूपासून वर्ण किंवा वृत (कर्म) हे शब्द तयार होतात. स्वभावतः जशी ज्याची वृत्ती, त्याचा तो वर्ण ! याप्रमाणे एकाच कुटुंबात भिन्न भिन्न वर्णांची चार भावंडे असू शकतात. त्यानुसार आई - वडील एका वर्णांचे तर मुले दुसऱ्या वर्णांचे असतात. भगवद्गीतेत श्रीकृष्णांनी देखील अशाच वर्णव्यवस्थेची अपेक्षा केली होती ---

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः!

दुर्दैवाने हीच वर्णव्यवस्था नंतर माणसाच्याच क्षुद्र मनोवृत्तीतून अनिष्ट अशा मत-पंथ व जातिव्यवस्थेत रूपांतरित झाली. न्यायसूत्र या ग्रंथात

जात शब्दाची व्याख्या करताना महर्षी गौतम म्हणतात-'समान प्रसवात्मिका जातिः !' म्हणजेच वेगवेगळ्या वस्तूसमूहामध्ये समानता दर्शविणारी व्यवस्था म्हणजे जात होय. ज्याप्रमाणे गाई, म्हशी, घोडे, वाघ, सिंह, हत्ती इत्यादी जाती त्याचप्रमाणे या सर्वांमध्ये बुद्धिमान समजली जाणारी मानव ही जात ! अशाच इतर देखील जीवजंतू किंवा प्राणिसमूहांच्या वेगवेगळ्या जाती! या सगळ्यात प्रत्येकामध्ये खाणे, पिणे, राहणे, वावरणे यांच्यात त्यांची- त्यांची समानता दिसून येते. म्हणून याच खऱ्या जाती ! म्हणूनच माणसांची केवळ एकच जात ती म्हणजे मानव! अशाच व्यवस्थेचे वर्णन वेद, उपनिषद, दर्शन.. इतकेच काय तर रामायणादी ग्रंथांत सुद्धा आढळते. पण वर्तमान रूढ झालेल्या अनिष्ट जातीप्रथेचे वर्णन मात्र या ग्रंथामध्ये मुळीच आढळत नाही.

दुर्दैवाने सध्याचे अभ्यासक वर्तमान जातीव्यवस्थेचे मूळ वैदिक शास्त्रात असल्याचे मानतात. त्यामुळे पवित्र व शुद्ध अशा वेद ज्ञानाची नाहक बदनामी होते. माणसां- माणसात एक समानता असतांना त्यांची जात वेगळी होऊच शकत नाही. व्यापार, उद्योग, धंद्यानुसार व गुण,कर्म, स्वभावधर्मानुसार त्यांच्यात वेगळेपण असू शकते. त्यानुसार आपण सर्व एकाच मानव जातीचे ! याच एका मानव जातीचे व मानवताधर्माचे वर्णन वेदादांनी केले आहे. ऋग्वेदातील एक ऋचा (१०/ ५३/६) म्हणते - मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ! म्हणजेच हे मानवा ! तू माणूस हो आणि दिव्य अशा समाजव्यवस्थेची निर्मिती कर ! आपण सर्व एकाच मानवजातीचे असताना (वर्तमान) वेगवेगळ्या जाती कशा काय असू शकतात? अशी मानवी एकात्मता असताना आजचा माणूस धर्म व जातिव्यवस्थेच्या दुष्टचक्रात अधिकच अडकून पडत आहे. अशा या पंथ व जातिव्यवस्थेचे मूळ वेदादी शास्त्रांना मानणे, योग्य नव्हे! दुर्दैवाने आजकाल वैदिक विचारांविषयी विज्ञाननिष्ठा व तर्कसंगत दृष्टिकोन न बाळगल्याने पुरोगामी विचारांचे अभ्यासक प्राचीन शास्त्रांविषयी असे अयोग्य विचार मांडत आहेत. महर्षी दयानंदांनी वेदांविषयी प्रतिपादित केलेला विशुद्ध अर्थ न जाणण्याचा व ते समजून न घेण्याचा हा परिणाम आहे. मनुस्मृती विषयी तर अशा प्रकारे मोठ्या प्रमाणात संभ्रम निर्माण झाले आहेत. ते दूर करण्याचा प्रयत्न विचारवंतांनी करावयास हवा!

राज्यस्तरीय श्रावणी वृत्तांत...

(मागील अंकावरून)

धर्माबाद येथे प्रतिसाद

धर्माबाद येथे दि.८ ते १३ सप्टेंबर दरम्यान आर्य समाजाचा श्रावणी उत्सव संपन्न झाला. वैदिक व्याख्याते आचार्य श्री यशवीरजी शास्त्री व भजनोपदेशक पं.नेत्रपालजी आर्य यांनी कार्यक्रम सादर करून श्रोत्यांची मने जिंकली. यज्ञात यजमान म्हणून सर्वश्री उत्तम चक्रवार, किरण मोतेवार, सायलू कासलोड, सदानंद तातुरकर , श्रीराम उत्तरवार, ओमनारायण कासट , गणेश मॅडमवार, संजय पवार, सचिन पोकलवार ,धनंजय उत्तरवार ,राम सुरकुटवार, अविनाश माळगे, प्राचार्य डॉ. कनगे, योगेश जोशी, सुशील चिद्रावार इत्यादी सहभागी झाले. त्याचबरोबर शहरातील हुतात्मा पानसरे विद्यालय व लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय येथेही व्याख्याने संपन्न झाली. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान श्री सूर्यकांत गंजेवार, मंत्री सुरेश गंजेवार, कोषाध्यक्ष नागनाथ नवमूलवार ,सुरेश चिंतावार ,अनिल आर्य, प्रशांत गंजेवार आदींनी प्रयत्न केले.

क) आचार्य सानन्दजी व पं. अजय आर्य यांचे कार्यक्रम

पानिपत (हरियाणा) येथून आमन्त्रित दार्शनिक विद्वान् आचार्य श्री सानन्दजी व मेरठ (उ.प्र.) येथून आलेले आर्य भजनीक श्री अजय आर्य यांच्या श्रावणी कार्यक्रमांची सुरुवात संभाजीनगर येथून झाली. त्यानंतर त्यांनी बीड, परळी, किल्लेधारुर, रेणापुर आणि शेवटी रामनगर (लातूर) येथे वेदप्रचार केला.

संभाजीनगरात दोन आर्य समाजात प्रचार –

छत्रपती संभाजीनगर(औरंगाबाद) येथील स.भु.कॉलनी आर्य समाजात दिवसातून एकदाच कार्यक्रम होत असत. तीन दिवसीय या कार्यक्रमात दोन्ही विद्वानांनी 'वैदिक विचारांनी मानवी जीवन सर्वदृष्ट्या विकसित होते, हे सांगून वेद ज्ञानाच्या आवश्यकतेवर भर दिला. प्रधान श्री जुगलकिशोरजी दायमा, मंत्री श्री दयारामजी बसैये व कोषाध्यक्ष श्री जोगेन्द्रसिंहजी चौहान यांसह अन्य कार्यकर्त्यांनी कार्यक्रम यशस्वी केले. बारखेडा परिसरातील आर्य समाजात दोन्ही वेळा यज्ञ संपन्न होत असत. विद्वानांचे विचार ऐकण्यासाठी श्रोत्यांची चांगली उपस्थिती लाभली. सोबतच बीड रोडवर संचालित पाणिनी कन्या

वेदपाठशाळेत देखील उपरोक्त विद्वानांचा कार्यक्रम झाला. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी मंत्री सौ.अंजू माने व मार्गदर्शक लक्ष्मण माने यांनी प्रयत्न केले.

बीड येथे सफलता –

बीड येथे बऱ्याच वर्षांच्या कालखंडानंतर श्रावणी उत्सवानिमित्त कार्यक्रम घेण्यात आला. आर्य विचारांचे अनुयायी व स्थानिक सोनाजीराव क्षिरसागर होमिओपॅथीक वैद्यकीय महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.श्री महेन्द्रप्रतापजी गौशाल यांच्या प्रमुख पुढाकाराने व पूर्ण सहकार्याने हा एकदिवसीय कार्यक्रम उत्साहात संपन्न झाला. सकाळी डॉ.गौशालजी यांच्या घरी पारिवारिक श्रावणी सत्संग घेण्यात आला. नंतर होमिओपॅथीक महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांकरिता मौलिक व्याख्यान घेण्यात आले. नंतर आदित्य दंत चिकित्सा महाविद्यालयातही जवळपास ३०० विद्यार्थ्यांच्या समुहासमोर वरील विद्वानांचे व्याख्यान पार पडले. दोन्ही महाविद्यालयातील विद्यार्थी विद्वानांच्या मौलिक मार्गदर्शनाने खूप प्रभावित झाले. तर संस्थांचे पदाधिकारी, प्राचार्य, मुख्याध्यापक यांनी कार्यक्रम उपलब्ध करून दिल्याबद्दल महाराष्ट्र सभेची कृतज्ञता व्यक्त केली.

परळीतील श्रोते प्रभावित –

सभेचे संपर्क कार्यालय असलेल्या व अतिशय सक्रिय समाज म्हणून ओळख असलेल्या परळी येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचार सप्ताह दि.२४ ते ३० ऑगस्ट दरम्यान पार पडला. या वेदसप्ताहात जवळपास ३० दांपत्य यजमान म्हणून सहभागी झाले. आमंत्रित दार्शनिक वैदिक विद्वान आचार्य सानंदजींनी प्रामुख्याने आध्यात्मिक विषयांवर भर दिला. त्यांचे तत्त्वज्ञानाधिष्ठित विचार ऐकण्यासाठी आर्य कार्यकर्त्यांसह शहरातील प्रतिष्ठित नागरिक देखील श्रद्धेने येत असत. भजनीक पं.अजय आर्य यांची भावपूर्ण भजने देखील श्रोत्यांना आवडली.

आर्य समाजासोबतच शहरातील नवगण महाविद्यालय, कै.ल.दे.महिला महाविद्यालय, वैद्यनाथ महाविद्यालय या शिक्षण संकुलातही या विद्वानांचे प्रबोधनपर कार्यक्रम पार पडले. अंतिम दिन, सामूहिक संस्कृत दिन समारंभात आचार्य सानंदजींनी मार्गदर्शन केले. या दरम्यान दोन्ही विद्वानांनी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमास भेट दिली व ब्रह्मचाऱ्यांना मार्गदर्शन केले. पूर्णाहुती

दिनी आर्य परिवारातील गुणवंत व यशवंतांचा सत्कार करण्यात आला. प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया यांच्या वतीने सर्वांच्या स्नेहभोजनाची व्यवस्था करण्यात आली.

धारुर श्रावणी सोत्साह -

धारुर येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचार उत्सव दि. ३१ ऑगस्ट ते ५ सप्टेंबर दरम्यान संपन्न झाला. दररोज सकाळी यज्ञ, भजन व प्रवचन तर रात्री राष्ट्रीय व सामाजिक विषयावर व्याख्याने होत असत. कार्यक्रमा दरम्यान यज्ञात यजमान म्हणून सर्वश्री उत्तमराव कंकाळ, उद्धव खाडे, प्रवीण जवकर, कमलाकर इंदुरकर, कृष्णा खंदाडे आदींनी सपत्नीक सहभागी होऊन श्रद्धेने आहुत्या प्रदान केल्या. धारुरचा आर्य समाज १८८० साली स्थापन झाला. मुंबईनंतर येथील कर्मठ आर्य सत्पुरुषांनी हा आर्य समाज उभारला. त्याकाळी बांधलेल्या या समाजाच्या जुन्या इमारतीतच दरवर्षीप्रमाणे याही वर्षीचा श्रावणी कार्यक्रम उत्साहात साजरा झाला. विद्वानांचे विचार ऐकण्यासाठी श्रोत्यांची उपस्थिती समाधानकारक होती. गावातील एका शाळेत आचार्य सानंदजी व अजयजीचे प्रबोधनपर कार्यक्रमही झाले.

रेणापुरात जिज्ञासूंचा सहभाग -

ऐतिहासिक आर्य समाज म्हणून प्रसिद्ध असलेल्या रेणापुरचा श्रावणी उत्सव उत्साहात पार पडला. त्रिदिवसीय श्रावणी कार्यक्रमात बृहद्‌यज्ञ, भजन संगीत व प्रवने तर व सामाजिक विषयावर कार्यक्रम झाले. श्रावणी यज्ञात सर्वश्री नामदेवराव साबदे(प्रधान), प्रभाकर लोखंडे(मंत्री), विजयकुमार खंदाडे, सत्यपाल राऊत, प्रवीण लोखंडे, भरत कासले, सौ.पुजा पुजारी, हनुमंत इगे, अशोक अपसिंगेकर(कोषाध्यक्ष) हे यजमान म्हणून सहभागी झाले. तीन दिवसीय या कार्यक्रमात श्रोत्यांची संख्या वाढत गेली. यावर्षीच्या श्रावणीचे वैशिष्ट्ये म्हणजे अनेक अभ्यासू श्रोते व धार्मिक परिवार आर्य समाजाशी जोडले गेले. विद्वानांचे विचार ऐकण्यासाठी ते आवर्जून उपस्थित राहत. एकूणच कार्यक्रमास उत्तम प्रतिसाद मिळाला.

लातूरच्या रामनगरात सांगता-

या दोन्ही विद्वानांच्या श्रावणी कार्यक्रमाची सांगता दि.१३ सप्टेंबर रोजी लातूर येथील प्रसिद्ध अशा रामनगर आर्य समाजात झाली. तत्पुर्वी ६ दिवस श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम यशस्वीरित्या

पार पडले. सप्ताहभरातील बृहद्यज्ञात शहरातील जवळपास २४ यजमान श्रद्धेने यज्ञात सहभागी झाले. सकाळी व संध्याकाळी श्रोत्यांची उपस्थिती मोठ्या प्रमाणात वाढत असे. श्रावणी कार्यक्रमादरम्यान दुपारच्या भोजनाची व्यवस्था सर्वश्री धर्मजीत आर्य, नारायण शास्त्री, रामरतन मोरे, भारत हंजाटे, ज्ञानदेव सावंत, शिवाजीराव शिंदे या दानशूर कार्यकर्त्यांनी केली होती. एकूणच श्रावणी कार्यक्रम अतिशय उत्साहात पार पडला. यासाठी प्रधान श्री शंकरराव मोरे, मंत्री श्री अनंत लोखंडे, कोषाध्यक्ष श्री राजेंद्र दिवे(सभामंत्री), श्री नागराज चुडमुडे, ज्ञानकुमार आर्य आदींनी प्रयत्न केले. शेवटच्या दिवशी कार्यक्रम संपल्यानंतर सर्व पदाधिकाऱ्यांनी आमंत्रित वैदिक विद्वानांना भावपूर्ण निरोप दिला.

ड)पं.ज्ञानप्रकाशजी आर्य व विष्णू आर्य

सभेतर्फे सोलापूर, लातूर, शिवणखेड, करडखेल, लोहारा या विभागासाठी बलिया (उ.प्र.) येथून आचार्य पं.ज्ञानप्रकाशजी आर्य हे विद्वान प्रवक्ते म्हणून तर मथूरा (उ.प्र.) येथून पं.विष्णू आर्य यांना भजनोपदेशक म्हणून आमंत्रित करण्यात आले होते. या विद्वान जोडीने प्रस्तावित आर्य समाजामध्ये प्रभावशाली प्रचार कार्य केले.

सोलापूर येथे चांगली सुरुवात –

सोलापूर येथील आर्य समाजाचा श्रावणी उत्सव दि.१७ ते २३ ऑगस्ट दरम्यान विविध कार्यक्रमांनी साजरा झाला. येथील प्रचारक पुरोहित पं.राजवीर जी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली दररोज श्रावणी यज्ञ संपन्न होत असे. यात शहरातील मान्यवर यजमान सपत्नीक सहभागी झाले. यज्ञानंतर पं.श्री विष्णू आर्य यांनी सादर केलेले भजन प्रेरणादायी ठरले. भजनानंतर विद्वान वक्ते पं.ज्ञानप्रकाश आर्य यांनी विविध विषयावर आपले मौलिक विचार मांडून श्रोत्यांना प्रभावित केले. आर्य युवक श्री वेदसुमन भोसले हे या श्रावणी कार्यक्रमांचे लाईव्ह प्रक्षेपण देखील सर्वत्र प्रसारित केले. हा श्रावणी कार्यक्रम सफल करण्यासाठी या संस्थेचे प्रधान, मंत्री व इतर पदाधिकारी यांनी अतिशय परिश्रम घेतले.

लातूरच्या २ आर्य समाजात कार्यक्रम

लातूर येथील गांधी चौक(दि.२४ ते ३० ऑगस्ट) व भक्तिनगर(दि.३१ ऑगस्ट व १ सप्टेंबर) या आर्य समाजात श्रावणी कार्यक्रम उत्साहात संपन्न झाले. दोन्ही ठिकाणी

सकाळी विशेष यज्ञ, भजन व प्रवचन तर रात्रीदेखील प्रबोधनपर कार्यक्रम पार पडले. त्याबरोबरच पारिवारिक सत्संग व शैक्षणिक संस्थामध्ये विद्वानांची व्याख्याने पार पडली. गांधी चौक आर्य समाजाचे कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, मंत्री प्रा.श्री शरदचंद्रजी डुमणे व इतर पदाधिकाऱ्यांनी प्रयत्न केले. तर भक्तिनगर येथे प्रधान ॲड.पांडुरंगराव खरे व मंत्री श्री अशोकराव पवार तसेच वैजनाथराव हालिंगे, व्यंकटेश हालिंगे, सदाशिवराव भालकीकर इत्यादींनी प्रयत्न केले.

शिवणखेड येथे उत्साहात श्रावणी

लातूर नंतर वरील विद्वान सुगाव ता.चाकुर येथे आले व श्री अशोकजी कातपुरे यांच्या घरी श्रावणीचा एकदिवसीय कार्यक्रम पार पडला. त्यानंतर जवळच असलेल्या शिवणखेड (ता.चाकुर, जि.लातूर) येथील आर्य समाजाचा वेदप्रचार उत्सव ३ ते ७ सप्टेंबर दरम्यान संपन्न झाला. नव्याने बांधण्यात आलेल्या आर्य समाज भवनात दररोज सकाळी विशेष यज्ञ व नंतर भजन व प्रवचनांचे कार्यक्रम झाले, तर रात्री देखील भजन प्रवचन पार पडत असत. श्रावणी यज्ञात यजमान म्हणून सर्वश्री विजयपाल कुल्ले, चंद्रपाल भागवत आरदवाड, धनंजय शिंदे, महारुद्र संघाप्पा नागुरे , गंगाधर तेलंगे, निवृत्ती आलापुरे आदी सपत्नीक सहभागी झाले. विशेष म्हणजे श्रोत्यांची उपस्थिती वाढावी, यासाठी आर्य कार्यकर्त्यांनी शिवणखेड गावात दवंडी देऊन श्रोत्यांची संख्या वाढवली. कार्यक्रमासाठी प्रधान श्री विजयपाल कुल्ले , मंत्री श्री बब्रुवाहन शिंदे, कोषाध्यक्ष श्री भागवतराव आरदवाड, निवृत्ती आलापुरे, तसेच संरक्षक व्यंकटराव कुल्ले, धनंजय शिंदे, गंगाधर तेलंगे,अनिल कुल्ले, इत्यादींनी प्रयत्न केले.

करडखेलमध्ये श्रावणी यशस्वी

उदगीर तालुक्याच्या करडखेल येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचार उत्सव दि.११ ते१३ सप्टेंबर दरम्यान उत्साहात साजरा करण्यात आला. यावर्षी आर्य पदाधिकाऱ्यांच्या प्रयत्नाने आर्य समाज भवनाची रंगरंगोटी करण्यात आली होती .यामुळे श्रावणी कार्यक्रमास शोभा आली. आचार्य ज्ञानप्रकाशजी शास्त्री यांनी धार्मिक , आध्यात्मिक, राष्ट्रीय व सामाजिक विषयावर विचार मांडले. यावेळी भजनीक पंडित विष्णू आर्य यांनीही सुमधुर भजन सादर केले. तसेच समारोप दिनी ज्येष्ठ स्वा.सै.श्री

आनंद मुनिजी (मन्मथाप्पा चिल्ले) यांचा सत्कार करण्यात आला.

श्रावणी यज्ञात यजमान म्हणून सर्वश्री श्याम शिवाजी देशपांडे, प्रभू अप्पा चिल्ले, दयानंद मारुती घोणसे, वीरभद्र बाबुराव हत्ते, विश्वनाथ प्रभूअप्पा राघू , रमेश बोंबले, नागनाथ सिद्रामप्पा चिल्ले हे सपत्नीक सहभागी झाले. विशेष म्हणजे राज्याच्या सिंचन विभागाचे निवृत्त संचालक मुख्य अभियंते श्री वैजनाथराव चिल्ले साहेब या कार्यक्रमात सहभागी झाले होते.

सोबतच गावातील जिल्हा परिषद हायस्कूल व मिलिंद विद्यालयात देखील विद्वानांच्या भजन- प्रवचनाचा कार्यक्रम पार पडला. यात ज्येष्ठ स्वा. सै. पूज्य श्री आनंद मुनिजींच्या वतीने विद्यार्थ्यांना शालेय साहित्याचे वितरण करण्यात आले. श्रावणीच्या सफलतेसाठी प्रधान श्री वीरभद्र हत्ते, मंत्री श्री प्रभूअप्पा चिल्ले, कोषाध्यक्ष नागनाथ पांचाळ इत्यादींनी यशस्वी प्रयत्न केले.

लोहारा गावात समारोप

या विद्वानांच्या श्रावणी कार्यक्रमांचा समारोप लोहारा येथभल आर्य समाजाच्या श्रावणी कार्यक्रमात झाला. ११ ते १३ सप्टेंबर या दरम्यान पार पडलेल्या येथील आर्यसमाजाच्या श्रावणी कार्यक्रमात सकाळी विविध यजमानांनी श्रद्धेने आहुत्या प्रदान केल्या. दोन्ही विद्वानांचा श्रोत्यांवर चांगलाच प्रभाव पडला. कार्यक्रमासाठी श्री तातेरावजी बिराजदार यांच्यासह पदाधिकाऱ्यांनी बहुमोल परिश्रम घेतले.

इ)आचार्य विवेकजी दीक्षित व पं.अमेरशजी आर्य

या दोन्ही विद्वानांच्या श्रावणी कार्यक्रमांची सुरुवात उमरगा येथील आर्य समाजातून झाली. दि.१७ ते २० ऑगस्ट दरम्यान या आर्य समाजात सकाळी बृहद्यज्ञाचे आयोजन झाले. यात गावातील प्रतिष्ठीत यजमानांनी उपस्थित राहून श्रद्धेने आहुत्या प्रदान केल्या. पं.अमरेशजी आर्य यांनी भजनाच्या माध्यमाने विविध विषयांवर मार्गदर्शन केले. तर आचार्य पं.विवेकजी दीक्षित यांनी 'वैदिक तत्त्वज्ञानाची सद्यस्थितीत आवश्यकता' या विषयावर मौलिक विचार मांडले. सकाळी व संध्याकाळी कार्यक्रम ऐकण्यासाठी श्रोते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित राहत असत. प्रधान श्री प्रतापराव चालुक्य व मंत्री श्री प्रा.डॉ.विठ्ठलराव जाधव यांच्यासह इतर पदाधिकाऱ्यांनी यशस्वी प्रयत्न केले. वरील विद्वानांचे इतरही ठिकाणी मार्गदर्शनपर कार्यक्रम संपन्न झाले.

गुंजोटी व औराद येथेही कार्यक्रम

उमरगा तालुक्यातील गुंजोटी या ऐतिहासिक वीर भूमीत दि.२१ ते २३ ऑगस्ट दरम्यान श्रावणी कार्यक्रम उत्साहपूर्वक संपन्न झाले. दररोज सकाळी व संध्याकाळी पार पडलेल्या कार्यक्रमात श्रोते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित राहत. सोबतच गावातील श्रीकृष्ण विद्यालय व महाविद्यालयातही वरील विद्वानांनी छात्रोपयोगी विचार मांडून संस्कारांचे बीजारोपण करण्याचा प्रयत्न करण्याचा प्रयत्न केला. कार्यक्रम सफल करण्यासाठी आर्य समाजाचे पदाधिकारी सर्वश्री प्रियदत्तजी शास्त्री, राजवीरजी शास्त्री, महाळप्पा दुधभाते, विश्वनाथजी कदेरे, विजयजी बेळंबे, विष्णू खंडागळे इत्यादींनी प्रयत्न केले.

या कार्यक्रमानंतर शेजारील औराद या गावातही २४ व २५ ऑगस्ट रोजी श्रावणी कार्यक्रम घेण्यात आले. वरील विद्वानांनी गावकऱ्यांना वैदिक सिद्धांताचे महत्त्व आणि मानवी जीवनात उपयोगिता या विषयावर प्रबोधन केले. यासाठी प्रधान श्री बळीरामजी सूर्यवंशी, मंत्री श्रीकृष्णजी(राजेंद्र) पाटील व इतर पदाधिकाऱ्यांनी प्रयत्न केले. विशेष म्हणजे गावातील श्री विज्ञानमुनिजी यांनी कार्यक्रमाचा प्रसार केला.

माडज येथे श्रावणीचा उत्साह

माडज या जुन्या आर्य समाजी गावी पं.विवेकजी दीक्षित व.पं.अमरेशजी आर्य यांनी आर्य वैदिक विचारांच्या प्रसाराकरिता नव्या पिढीने पुढे यावे असे आवाहन करून वैदिक सिद्धांत हे सद्यस्थितीत अत्यंत मोलाचे असल्याचे सांगितले. आर्य समाजासोबतच स्थानिक शाळेमध्येही विद्वानांचे कार्यक्रम पार पडले. श्रावणी उत्सव यशस्वी करण्यासाठी श्री दिलीपसिंहजी आर्य व इतरांनी प्रयत्न केले.

निलंगा येथे श्रावणी पर्व उत्साहात

निलंगा(जि. लातूर) येथील आर्य समाजात २८ ते ३०ऑगस्ट दरम्यान श्रावणी वेद प्रचार पर्व उत्साहात साजरा झाला. वैदिक विद्वान पं. विवेकजी दीक्षित यांनी आपल्या ओजस्वी शैलीतून श्रोत्यांसमोर अभ्यासपूर्ण विचार मांडले व सर्वांना प्रभावित केले, तर देववंदचे भजनोपदेशक पं.अमरेशजी आर्य यांनी आपल्या भजनांद्वारे श्रोत्यांची मने जिंकली.

या चतुर्दिवसीय कार्यक्रमांदरम्यान सकाळी आर्य समाजात विशेष यज्ञ, भजन व प्रवचन आणि त्याचप्रमाणे रात्री देखील विविध विषयांवर विद्वानांची व्याख्याने झाली. यज्ञात यजमान म्हणून

सर्वश्री नेताजी सुरवसे, बालाजी सूर्यवंशी, गौरव आर्य, प्रमोद धर्मशेट्टी, इत्यादी सपत्नीक सहभागी झाले. हा श्रावणी कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान श्री विजयकुमार कानडे, मंत्री श्री अजित शाहीर व इतर पदाधिकाऱ्यांनी मोलाचे प्रयत्न केले.

औराद(श.) येथे मुक्ती संग्राम व श्रावणी

औराद शहाजानी येथील आर्य समाजाचा श्रावणी उत्सव दि.१ ते ६ सप्टेंबर या दरम्यान पार पडला. सभेकडून आलेले वैदिक विद्वान आचार्य विवेकजी दीक्षित व भजनोपदेशक पं.अमरेजी आर्य यांनी आपल्या ओजस्वी वाणीतून मौलिक विचार मांडले. दररोज सकाळी विविध यजमानांनी सपत्नीक उपस्थित राहून श्रद्धेने आहूत्या प्रदान केल्या व विद्वानांची प्रवचने अगदी मंत्रमुग्ध होऊन श्रवण केली. दरवर्षी प्रमाणे याही वर्षी श्रावणी मास या अंतर्गत दररोज सायंकाळी पारिवारिक सत्संग संपन्न झाले. प्रतिदिन एका यजमानाच्या घरी जाऊन आर्य कार्यकर्त्यांनी यज्ञाच्या माध्यमाने परिवारांना आर्य समाजाशी जोडण्याचा प्रयत्न केला.

यावर्षी हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्रामाचा अमृत महोत्सव व श्रावणी वेदप्रचार पूर्णाहुती कार्यक्रम दि.१७ सप्टेंबर रोजी संयुक्तरीत्या अत्यंत उत्साहात संपन्न झाला. श्रावणी मास सोहळयाची सांगता हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्राम दिनी झाली. हैदराबाद मुक्ती संग्रामातील स्वातंत्र्यसैनिकांच्या वारसांच्या यजमानांच्या उपस्थितीत पुरोहित प्रकाश कच्छवा यानी यज्ञ संपन्न केले. तेरणातीर साप्ताहिकाचे संपादक श्री पी.आर.पाटील हे अध्यक्षस्थानी होते .प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रा. डॉ. सचिन हंचाटे व प्राचार्य डॉ. प्रदीप पाटील, स्वा.सै.श्री मल्लीकार्जुन चाकोते, बोरसुरी आणि श्री राजेंद्र डोईजोडे होते . प्रास्ताविक श्री भरत बियाणी नी केले .श्री राजेंद्र डोईजोडे यानी आर्य समाजाला रु. एक लाख दान दिले. त्याचा आर्य समाजाच्या वतीने श्री बस्वराज वलांडे (अध्यक्ष, शारदोपासक शिक्षण संस्था) याचे हस्ते सत्कार करण्यात आला.

उदगीरात वेदप्रचारांसोबतच पारिवारिक सत्संग

उदगीर येथील आर्य समाजात परंपरागत वेदप्रचार कार्यक्रमांसोबतच वेगवेगळ्या कुटुंबात पारिवारिक सत्संगाचे आयोजन करून श्रावणी कार्यक्रमाला अभिनव रूप देण्यात आले होते.

सभेकडून आमंत्रित वैदिक विद्वान आचार्य विवेक दीक्षित यांनी

आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणांतून वैदिक सिद्धांतांचे महत्त्व पटवून दिले. दररोज एका मंत्रावर सुगम असे विवेचन करून त्यांनी वेदांची शिकवण श्रोत्यांमध्ये रुजविण्याचा प्रयत्न केला. देवबंद (उ. प्रदेश) येथून आलेले भजनोपदेशक पं. अमरेशजी आर्य यांनी मार्गदर्शन केले. सत्संगाचे आयोजन करणाऱ्या यजमानांत सर्वश्री प्रभाकर बिराजदार, विश्वनाथ सुवर्णकार, भालचंद्र घोणसीकर, श्रीमती विद्या सिद्धमवार, आनंद बायस, सतीश मगदाळे ,नरसिंग पाटील, अनिल जानापुरकर, प्रशांत फड, राजेंद्र मुळखेडे, प्राचार्य राजकुमार नावंदर, विशाल तोंडचिरकर, सुबोध अंबेसंगे, बंडू बेंद्रे, भाऊराव अहमदाबादे, बलराज कंधारे , नामदेव आपटे, परिमल बेंद्रे , सुनील तोंडचिरकर, प्रा.डा. नरेंद्र शिंदे इत्यादींचा समावेश आहे.हा श्रावणी कार्यक्रम सफल करण्यासाठी प्रधान प्रा.बाबुराव नक्टे, मंत्री नरेंद्र शिंदे- शास्त्री, कोषाध्यक्ष अजित कुमार सरसंबे, संरक्षक व सभेचे उपमंत्री प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, सुबोध अंबेसंगे, बलराज कंधारे, सौ. सुमनताई चौहान, सौ.संध्या बेंद्रे,सौ. मधुमती शिंदे, सतीश मगदाळे आदींनी प्रयत्न केले.

(उर्वरित पुढील अंकात..)

वार्ता विशेष

दिव्यज्योती फाउंडेशन तर्फे गुरुकुलात गणवेश वाटप

संभाजीनगर(औरंगाबाद) येथील दिव्य ज्योती फाउंडेशन या सामाजिक संस्थेच्या वतीने परळीच्या श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमातील विद्यार्थ्यांना नुकतेच गणवेशाचे वाटप वितरण करण्यात आले. आर्य सामाजिक कार्यकर्ते ॲड.श्री जोगेंद्रसिंहजी चौहान यांच्या प्रेरणेने फाउंडेशनच्या वतीने गुरुकुलास हे दान मिळाले आहे. गुरुकुलात नुकत्याच झालेल्या कार्यक्रमात संस्थेचे अध्यक्ष श्री गणेश मुंडे, उपाध्यक्ष प्रज्ञाचक्षू श्री निकेश मंदिरे, सचिव एड. जोगेंद्रसिंगहजी चौहान यांच्या शुभहस्ते गुरुकुलाचे आचार्य श्री सत्यन्द्रजी विद्योपासक यांच्या प्रमुख उपस्थितीत ब्रह्मचाऱ्यांना या वस्त्रांचे वाटप करण्यात आले.

जवळपास ४० हजार रुपयांची शुभ्र सुती वस्त्रे यावेळी प्रदान करण्यात आली, तर शिलाईसाठी लागणारे जवळपास १० हजार रुपये आचार्य श्री सत्येंद्रजींना प्रदान करण्यात आले. शेवटी आचार्यजींनी दानदात्यांचे आभार मानले.

महाजन महाविद्यालयात आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र संपन्न

धाराशिवच्या व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालयात राष्ट्रीय हिंदी दिनाचे औचित्य साधून दि. १४ सप्टेंबर रोजी ऑनलाइन पद्धतीने आभासी आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र घेण्यात आले.यात देश विदेशातील ठिकठिकाणच्या जवळपास २०० तज्ज्ञ अभ्यासकांनी सहभाग घेतला. महाविद्यालयाचे रौप्य महोत्सवी वर्ष, थोर वेदज्ञ समाज सुधारक महर्षी दयानंद सरस्वतींची २०० वी जयंती, हैदराबाद मुक्ती संग्रामाची ७५ वर्षे तसेच राष्ट्रीय हिंदी दिनाच्या निमित्ताने सदरील आंतरराष्ट्रीय ऑनलाईन राष्ट्रीय चर्चासत्र घेण्यात आले. 'महर्षि दयानंद की विचारधारा से प्रभावित हिंदी भाषी आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं का हैदराबाद मुक्ति संग्राम में योगदान' असा विषय या आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्राचा निश्चित करण्यात आला होता.

यात प्रा. डॉ. राम जाधव, प्रा.श्री प्रवीण जाहुरे, लंडन येथील वैदिक विद्वान डॉ. रामचंद्र पाटील, मॉरिशस येथील प्रो. डॉ. उदय नारायण गंगू, प्राचार्य प्रो.डॉ.प्रशांत चौधरी यांनी विचार मांडले. प्रास्ताविक हिंदी विभाग प्रमुख डॉ.विनोद कुमार वेदार्य यांनी केले.

उदगीर येथे संस्कृत स्पर्धा संपन्न

संस्कृत दिनानिमित्त उदगीर येथे आर्य समाजात दि.१७ सप्टेंबर रोजी संस्कृत भाषण स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. स्वा.सै.भीमराव शिवन्ना मुळखेडे यांच्या स्मृत्यर्थ श्री राजेंद्र मुळखेडे यांच्या सहकार्याने या स्पर्धा झाल्या. पहिल्या गटातून बिरादार अभिजीत(प्रथम), हर्ष बाचावाड (द्वितीय), श्रेयस आमगे(तृतीय)दुसऱ्या गटातून श्रेया कुलकर्णी(प्रथम), रागिणी ढगे (द्वितीय), सायली कुलकर्णी(तृतीय) यशस्वी ठरले. स्व. दत्तराव गांगजी यांच्या स्मृत्यर्थ सर्व स्पर्धकांना ग्रंथ साहित्य वाटप झाले. स्पर्धेच्या अध्यक्षस्थानी प्रा.बाबुराव नवटके, प्रमुख अतिथी ज्येष्ठ स्वा.सै.आनंदमुनीजी, प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे होते. स्पर्धेचे परीक्षण स्मिता तिवारी व डॉ. सुरेखा गुजलवार यांनी पाहिले.सूत्रसंचलन मधुमती शिंदे यांनी केले. वरिष्ठ मार्गदर्शक प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी यांनी आभार मानले. दिलीप कंधारे, सुबोध अंबेसंगे व प्रतापसिंह चौहान यांनी कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी परिश्रम घेतले.

परळीत सामुहिक संस्कृत दिन साजरा

परळी येथील आर्य समाजात दि.३० ऑगस्ट रोजी 'संस्कृत दिन' उत्साहात साजरा झाला. यात प्रमुख पाहुणे म्हणून प्रा.सोनेराव आचार्य, आचार्य सानंदजी हे होते. अध्यक्षस्थानी मंत्री श्री उग्रसेन राठौर होते. आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणात श्री आचार्य यांनी संस्कृत भाषेच्या गुणवैशिष्ट्यांवर ओघवत्या शैलीतून प्रकाश टाकला.

संस्कृत दिनानिमित्त घेण्यात आलेल्या श्लोक पाठांतर व भाषण स्पर्धांमध्ये यश संपादन करणाऱ्या विद्यार्थ्यांना मान्यवरांच्या शुभहस्ते पुरस्कारांचे वितरण करण्यात आले. या दोन्ही स्पर्धांमध्ये ३०० विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदवला. स्पर्धेला परीक्षक म्हणून पं.दयानंद शास्त्री व इतर शिक्षक होते. यावेळी प्रधान जुगलकिशोर लोहिया, उपमंत्री पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, संज्योत लाहोटी, गावातील संस्कृत शिक्षक व संस्कृतप्रेमी, नागरीक व विद्यार्थी उपस्थित होते. प्रास्ताविक डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी, सूत्रसंचालन डॉ. अरुण चव्हाण व सौ. पल्लवी फुलारी यांनी केले, तर आभार प्रा. डॉ. वीरेंद्र शास्त्री यांनी मानले. सफलतेसाठी सर्वश्री रंगनाथ तिवार, लक्ष्मण आर्य गुरुजी, उदय तिवार, सोमेंद्र शास्त्री व इतरांनी परिश्रम घेतले.

योगमुनी, राठौर व श्री लोहिया यांचा सत्कार

आर्य संघटना व शिक्षण संस्थांवरील विविध पदांवर नियुक्ती करण्यात आल्याबद्दल वरिष्ठ आर्यजनांचा प्रांतीय सभेच्या वतीने अंतरंग व साधारण बैठकीत नुकताच परळी येथे सत्कार करण्यात आला. यात सभाप्रधान श्री योगमुनिजी यांची केंद्र शासनाच्या वतीने देशपातळीवर साजऱ्या होणाऱ्या ९७ सदस्याय महर्षी दयानंद द्विजन्मशताब्दी उच्चस्तरीय समितीवर सदस्य म्हणून निवड झाल्याबद्दल, त्याचबरोबर हिंगोली येथील दयानंद एज्युकेशन सोसायटीच्या अध्यक्षपदी सभेचे कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर ची निवड झाल्याबद्दल, तर परळी येथील भारतीय शिक्षण प्रसारक मंडळाच्या भेल सेकंडरी स्कूल या शाळेच्या स्थानिक व्यवस्थापन समितीच्या अध्यक्षपदी आर्य समाज परळीचे प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया यांची अध्यक्ष म्हणून निवड झाल्याबद्दल त्यांचा मान्यवरांच्या शुभहस्ते सत्कार करण्यात आला.

धोंडूप्रसादजी तिवारी यांचे निधन

साकोळ (ता. शिरूर अनंतपाळ) येथील आर्य समाजाचे माजी प्रधान व मार्गदर्शक श्री धोंडूप्रसादजी लक्ष्मणप्रसादजी तिवारी यांचे ६ नोव्हेंबर २०२३रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ८५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे पाच मुले, एक मुलगी, सुना, जावई असा परिवार आहे. एका वर्षापूर्वी त्यांच्या पत्नीचे निधन झाले होते. श्री तिवारी हे जुन्या पिढीतील आर्य समाजी कार्यकर्ते व काँग्रेस पक्षाचे स्थानिक नेते होते. आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यासाठी ते नेहमीच प्रयत्नशील असत. त्यांच्याच प्रयत्नातून आर्य समाजाच्या जागेवर स्थानिक आमदार फंडातून मिळालेल्या निधीने सभागृह बांधण्यात आले होते. श्री तिवारी हे साकोळ गावातील प्रतिष्ठित नागरिक, कष्टकरी शेतकरी व १५ वर्षे स्थानिक ग्रामपंचायतीचे उपसरपंच होते. दिवंगत श्री तिवारी यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी दुपारी बारा वाजता पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. लातूरचे वेदप्रचारक प्रा. चंद्रेश्वरजी शास्त्री यांनी हा अंत्यसंस्कार विधी पार पाडला.

कौशल्याबाई तावडे यांचे देहावसान

तळणी (ता.हदगांव) येथील आर्य समाजाचे प्रधान डॉ.श्री नामदेवराव तावडे यांच्या धर्मपत्नी सौ.कौशल्याबाई(वय ७३) यांचे दि.१८ ऑक्टोबर २०२३ रोजी सकाळी ८.४० वा. हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. काही महिन्यांपासून त्या आजारी होत्या. त्यांच्यामागे पती, दोन मुले, दोन मुली, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. सौ.कौशल्याबाई या गृहकार्यात दक्ष, आदर्श गृहिणी, श्रमशील कृषिका व आदरातिथ्य करणाऱ्या आर्य महिला होत्या. त्यांच्या पार्थिवावर संध्याकाळी ७ वा. पुर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. मंत्री श्री शेषराव मगर व इतरांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

दिवंगत आत्म्यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली व सखेद सांत्वना..!

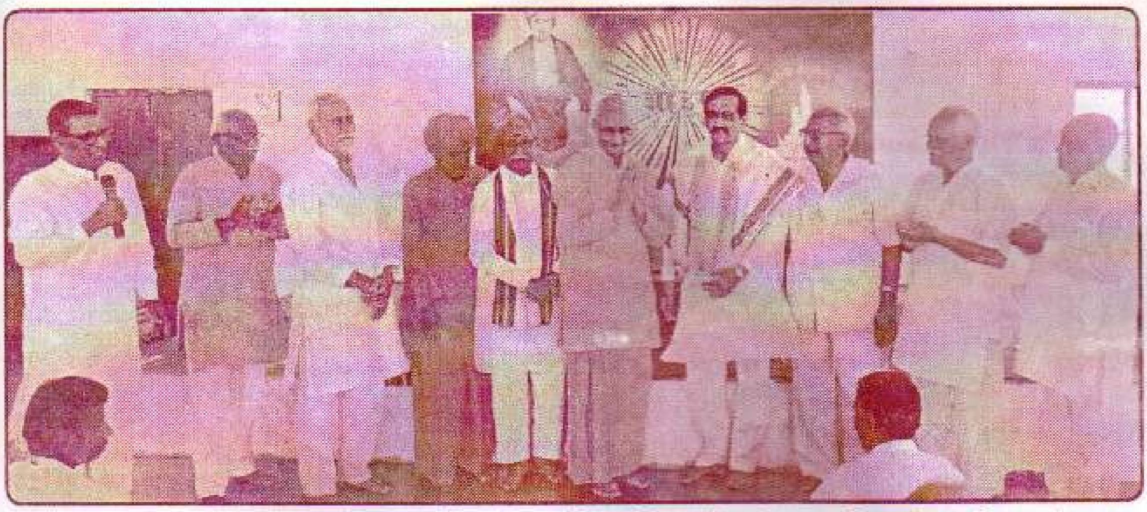

विभिन्न पदों पर नियुक्त किये गये सर्वश्री योगमुनिजी, उग्रसेनजी राठौर एवं जुगलकिशोर लोहिया का प्रांतीय आर्य सभा द्वारा परली में अभिनन्दन किया गया।

आर्य समाज उदगीर में आयोजित संस्कृत दिवस समारोह में पुरस्कार विजेता छात्रों के साथ पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता, संस्कृत अध्यापक।

आर्य समाज परली में संपन्न हुए सामुहिक संस्कृत दिवस समारोह में विजेत्री छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रा.सोनेरावजी आचार्य एवं अन्य।

भारत के व्यंजनों का आधार है,
एम.डी.एच.मसालों से प्यार है....

MDH

महान उद्यमी एवं समाजसेवी व्यक्तित्त्व,
दानवीर आर्य विभूति
पद्मभूषण स्व.महाशय धर्मपालजी आर्य
भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि एवं शतशः वन्दन !

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा.) लिमिटेड
९/४४, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-११००१५ फोन नं.०११-४१४२५१०६-०७-०८
E-mail:mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

REG.No.MAHBIL/2007/7493*
*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।

मातृ देवो भव !

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि !

॥ओ३म्॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी, वैदिक सिद्धान्तों के अध्येता
दानशूर आर्य कार्यकर्त्ता श्री समाधान लक्ष्मीकांतजी पाटिल
व सौ. कविता समाधान पाटिल
मु. पो. सावखेडा (खुर्द) ता. जि. जलगांव एवं पाटिल परिवार
की ओर से अपनी पूजनीया दादीमाँ
स्व. श्रीमती गुंढरबाई किशनरावजी पाटिल
इनकी पावन स्मृति में
वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट